बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 71 : अंक : 10 पृष्ठ : 56 फाल्गुन-चैत्र 1940-41 मार्च 2019

लेख

लोकप्रिय होली	चेतनादित्य आलोक	6
पानी का सम्मान करें : राजेन्द्र सिंह	राजेन्द्र सिंह	15
आवश्यक है सर्तक और जागरूक रहना	आर.पी. रतूड़ी	18
जीवन एक परीक्षा	---	21
नमक सत्याग्रह	जे.बी. कृपलानी	25
पॉपकार्न सभी हैं दिवाने	विनोद गुप्ता	34
फांसी के तख्ते पर	वीरेन्द्र सिन्धु	40
'गांधीजी और स्वच्छता' विषय पर पेंटिंग प्रतियोगिता और कार्यशाला का आयोजन	---	46

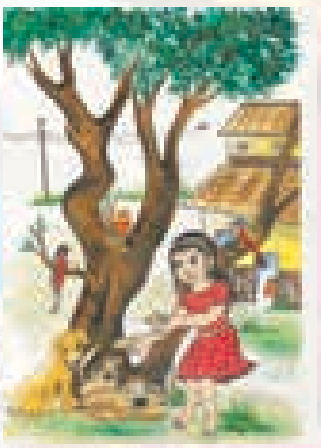

कहानियां

लड़कियां किसी से कम नहीं	मानस	11
आज न छोड़ेंगे	मोनिका अग्रवाल	23
परमाणु बिजली घर	दिलीप भाटिया	44
वसुधैव कुटुम्बकम्	अमिताभ शंकर रायचौधरी	48
दोस्तों ने जान बचाई	पवन कुमार वर्मा	51

कविताएं

तेल बचाएं देश बढ़ाएं	विजय के. सिंह	14
एक वृक्ष यूं ही नहीं मर जाता	ध्रुव सहगल	24
अक्कड़ मक्कड़	भवानी प्रसाद मिश्र	28-29
चलकर प्यारे	जियाउर रहमान जाफ़री	35
सफाई अभियान	ज्योति कुमारी	50
होली आएगी	तारा निगम	53

उपन्यास

पिंकू के कारनामे		36

चित्रकथा 30-33

वरिष्ठ संपादक : **राजेंद्र भट्ट**

संपादक : **आभा गौड़**

दूरभाष : 011-24362910

व्यापार व्यवस्थापक

ई-मेल : *pdjucir@gmail.com*

दूरभाष : 011-24367453

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : **वी. के. मीणा**

आवरण : **शिवानी**

चित्रांकन : **गुंजन द्विवेदी, शिवानी, प्रज्ञा उपाध्याय**

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*

वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*

फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :

संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारी बात

होली रंगों का रंगबिरंगा त्यौहार... शरारत, मस्ती, खिलखिलाहट और खुद से रूबरू होने का त्योहार। होली सुनते ही चेहरे खिल जाते हैं क्योंकि शायद ही कोई ऐसा हो जिसके पास होली से जुड़े रोचक और मनोरंजक किस्से ना हों।

बच्चो! हमारा हर पर्व प्रकृति से जुड़ा है। इन दिनों प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। रंग-बिरंगे फूल, पत्ते, पीली सरसों और शीत तथा ग्रीष्म ऋतु का संधि काल मौसम को खुशनुमा बनाए रखता है। बाहर के ये रंग हर व्यक्ति के अंतर्मन तक उतर जाते हैं और वसंत पंचमी से उड़ाए जाने वाला गुलाल होली पर हर चेहरे और शरीर पर अपनी छाप छोड़ देता है। रोजमर्रा के निरर्थक आवरण के खोल को उतार लोग हंसी-ठिठोली और नाच-गाकर एक-दूसरे के गले मिलते हैं और रंग खेलते हैं... यह भी कहते हैं 'बुरा न मानो... होली है' यानी शरारतों और उन्मत्त पर्व का आनंद वह भी शालीनता के साथ।

साथियो! रंग-गुलाल के साथ होली में पानी की भी नटखट भूमिका है। रंगीन पानी से जब तक सराबोर न हो जाएं तो होली, होली जैसी लगती कहां है और इस महीने तो अंतर्राष्ट्रीय जल दिवस भी है। हम सभी जानते हैं कि आज विश्व कितने बड़े जल संकट से गुजर रहा है। बच्चो, आपने कभी सोचा है कि यदि हमें एक दिन भी पानी न मिले तो हमारा क्या होगा? और पानी पर हमारा ही नहीं पेड़-पौधे, पशु-पक्षी यानी सभी सजीव प्राणियों का भी अधिकार है। प्रकृति के सबसे समर्थ प्राणी होने के नाते हम अपनी सुविधाओं के लिए अन्य सजीव प्राणियों के हिस्से का पानी नष्ट नहीं कर सकते, जबकि कर हम यही रहे हैं।

वसंत और प्रकृति के रंगों का आनंद हम होली में गुलाल और पानी के साथ उठाते हैं। ऐसे में यह ध्यान रखना निःसंदेह अब आवश्यक हो गया है कि हम इन ऋतुओं और पर्वों का रंग फीका और सूखा न पड़ने दें। यदि हम पानी की सुरक्षा और उसकी साफ-सफाई का ध्यान रखेंगे, पेड़-पौधों और फसलों के लिए भी स्वच्छ पानी की सुचारू व्यवस्था रखेंगे तभी प्रकृति अपनी रंगत के साथ हमें लुभा सकेगी, आनंदित कर सकेगी, स्वस्थ रख सकेगी और हम होली ही नहीं, अनेक प्राकृतिक पर्व मना सकेंगे। वरना पानी की कमी, विशेष रूप से साफ पानी की कमी हमें ही नहीं संपूर्ण प्रकृति में कुपोषण और विनाश का कारण बनेगी जिसकी भरपाई आसानी से संभव नहीं। यह एक गंभीर समस्या है जिसका हल हम सब मिलजुल कर ही निकाल सकते हैं।

आओ साथियो, होली के पावन पर्व पर अपने अभिभावकों और भाई-बहनों के साथ यह प्रण करें कि हम अपने आस-पास पानी का दुरुपयोग नहीं होने देंगे, न ही व्यर्थ पानी बहने देंगे। हम पानी की स्वच्छता का ध्यान रखेंगे और अपने आस-पास पेड़-पौधे, पक्षियों और जीव-जंतुओं के लिए पानी की समुचित व्यवस्था करेंगे। और अंत में... हम पानी का सम्मान करेंगे। ताकि हर होली में हमारे पास पानी की पर्याप्त व्यवस्था हो।

आपकी बात

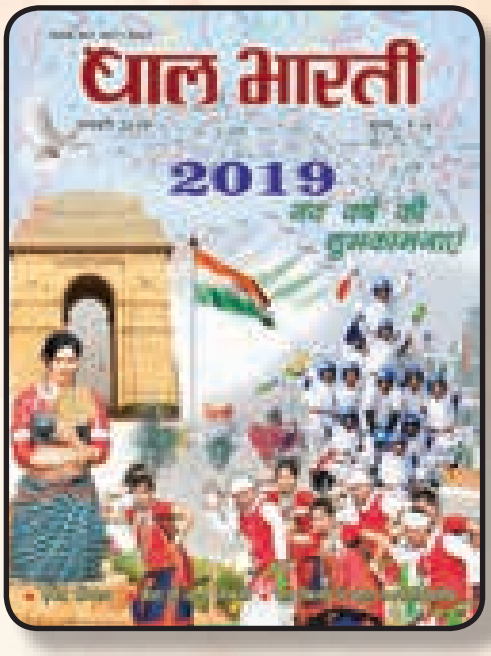

बाल भारती, जनवरी 2019 का अंक मिला। यह पत्रिका पढ़ते हुए मुझे चार वर्ष हो गए हैं। जब मैं कक्षा प्रथम में थी तो पापा ने मुझे यह पत्रिका लाकर दी थी। शुरू में मैं ठीक से पढ़ नहीं पाती थी तो मेरे दादा जी मुझे पढ़कर सुनाते थे। जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई *बाल भारती* स्वयं ही पढ़ते रहने से मुझे हिंदी भाषा का ज्ञान भली-भांति हुआ। यह पत्रिका पढ़ना मुझे बहुत पसंद है और अब यह मेरी प्रिय पत्रिका है। पत्रिका मिलते ही मैं इसे पढ़ना शुरू कर देती हूं और पूरी पढ़ने के बाद अपने दोस्तों को भी पढ़ने के लिए देती हूं। उन लोगों को भी यह पत्रिका बहुत पंसद है। जब से मैं यह पत्रिका पढ़ रही हूं तभी से सारे अंक संग्रह करके रखती हूं। जब हमारे यहां कोई बच्चा आता है तो उसे मैं पढ़ने के लिए देती हूं, उन्हें भी ये पत्रिका पसंद आती है। यह पत्रिका है ही ऐसी कि किसी को भी पसंद आए। यह हमारी संपूर्ण पत्रिका है।

–अमन कुमार, मुजफ्फरपुर

मैं यह पत्रिका पिछले 10 वर्षों से पढ़ रहा हूं और अब इस पत्रिका को मेरी बेटी पूजा जो कि 8 वर्ष की है वह भी मन लगाकर पढ़ती है। निश्चित रूप से यह पत्रिका बच्चों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित हो रही है। कहानी, कविता, लेख इत्यादि के अलावा चित्रकथा काफी ज्ञानवर्द्धक एवं दुर्लभ होते हैं। साथ ही विशेष दिवस के विषयों पर छपे लेख भी काफी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक होते हैं।

–विकास कुमार, वैशाली

बाल भारती जनवरी अंक पढ़ा। हर बार की तरह इस बार भी मनमोहक सामग्रियों की सौगात के साथ पत्रिका मिली। मेरे यहां बाल भारती 2004 से आ रही है। तब मैं किशोर था, लेकिन आज भी मैं इसका पाठक हूं। इसके प्रत्येक अंक को मैंने संभाल कर रखा है। जनवरी 2019 के अंक में *नव वर्ष की शुभकामनाएं*, *बदल गया नज़रिया* और *बिना बिजली का टेबल लैंप* मुझे पसंद आईं और कविताओं में *चिड़िया और चुरूंगुन* तथा *काम आएगी पढ़ाई* बहुत अच्छी लगी। मैं इस पत्रिका को बार-बार पढ़ता हूं। बच्चों की इतनी अच्छी पत्रिका प्रकाशित करने के लिए *बाल भारती* के संपादक मंडल को बहुत-बहुत धन्यवाद।

–अभिषेक, चंदर विहार, दिल्ली

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें।
आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

लोकप्रिय होली

–चेतनादित्य आलोक

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण भारतीय त्योहार है। यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। यह भारत का तो एक प्रमुख त्योहार है ही, लेकिन नेपाल में भी इसे प्रमुखता से मनाया जाता है। होली का त्योहार वस्तुतः भारतीय परंपरा का वह स्वर्णिम पन्ना है, जो रिश्तों को नई ताज़गी देने के लिए प्रसिद्ध है। इस दिन लोग आपसी ईर्ष्या, द्वेष एवं भेदभाव को भुलाकर एक-दूसरे के साथ होली खेलते हैं, रिश्तों पर जमी कड़वाहट को धोकर एक-दूसरे पर प्रेम, सद्भाव और दोस्ती का रंग डाल जीवन में फिर से मिठास घोलने का कार्य होली का वास्तविक तात्पर्य है।

रंगों का त्योहार दो दिनों का होता है, जिसके पहले दिन होलिका को जलाया जाता है। इस कार्यक्रम को 'होलिका दहन' के नाम से भी जाना जाता है। त्योहार के दूसरे दिन जो कि होली का मुख्य दिन होता है, को धुरड्डी, धुलेंडी, धुरखेल या धूलिवंदन भी कहा जाता है। इस दिन लोग प्रायः दोपहर तक एक-दूसरे के साथ विविध प्रकार के रंगों आदि से होली खेलने और गाने-बजाने में व्यस्त रहते हैं। दोपहर के बाद स्नान कर भोजन आदि करते हैं। फिर शाम को लोग नए कपड़े पहन एक-दूसरे के घर मिलने जाते हैं, जहां वे आपस में गले मिलते हैं और एक-दूसरे को अबीर-गुलाल आदि लगाकर होली की शुभकामनाएं देते हैं। इस अवसर पर लोग

विभिन्न प्रकार की मिठाइयां एवं पकवान खाते और खिलाते हैं।

देश भर में होली के विविध रूप

सत्य ही कहा गया है कि हमारा भारतवर्ष विविध ताओं में एकता वाला देश है। दुनिया में दूसरा कोई भी देश इतनी विविधताओं से भरा नहीं है। यह विविधता होली के त्योहार में भी देखने के लिए मिलती है। स्पष्टत: हमारी यह होली भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाई जाती है। देश भर में मनाई जाने वाली होली से संबंद्ध उसके विभिन्न रस्मों और परंपराओं की कुछ विशेष बातें यहां पर प्रस्तुत हैं।

बरसाने की होली– बरसाने की लठ्ठमार होली विश्व प्रसिद्ध है। यह फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष नवमी को मनाई जाती है। इस दिन नंद गांव के ग्वाल-बाल होली खेलने के लिए राधा रानी के गांव बरसाने आते हैं, जहां जम कर बरसती लाठियों के साए में होली खेली जाती है। इस अवसर पर पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएं उन्हें लाठियों तथा कपड़े से बनाए गए कोड़ों से मारती हैं। इस होली को देखने के लिए बड़ी संख्या में देश-विदेश से लोग बरसाना आते हैं।

मथुरा-वृंदावन की होली– कृष्ण और राधा की नगरी मथुरा-वृंदावन में मनाई जाने वाली फूलों की होली दुनिया भर में प्रसिद्ध है। एक सप्ताह तक मनाए जाने वाले इस आनंदोत्सव के दौरान लोग यहां के पारंपरिक भोजनादि का भी आनंद उठाते हैं।

मालवा की होली– मालवा में होली के दिन लोग एक-दूसरे पर अंगारे फेंकते हैं। उनका विश्वास है कि इससे होलिका नामक राक्षसी का अंत हो जाता है।

राजस्थान की होली– राजस्थान में होली के अवसर पर तमाशों के आयोजन की परंपरा है। इन तमाशों में कलाकार नुक्कड़-नाटक की शैली में नृत्य और अभिनय के माध्यम से अपनी पारंपरिक कला का प्रदर्शन करते हैं। तमाशों की विषय-वस्तु हमारी पौराणिक कहानियां होती हैं। कई बार कलाकार इन तमाशों के माध्यम से हमारी सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों पर व्यंग्य भी करते हैं।

उदयपुर की होली– राजस्थान के उदयपुर की शाही अंदाज में मनाई जाने वाली होली बहुत प्रसिद्ध है। जो लोग शाही अंदाज की होली देखना और खेलना चाहते हैं, उन्हें होली का त्योहार उदयपुर

में मनाना चाहिए, जहां राजस्थानी गीत-संगीत में सराबोर होली का आयोजन अत्यंत भव्य शैली में किया जाता है।

आंनदपुर साहिब की होली– पंजाब राज्य के आंनदपुर साहिब में मनाई जाने वाली होली का अंदाज भी बड़ा अनोखा होता है। होली के अवसर पर यहां आयोजित होने वाले कार्यक्रम को 'होला मोहल्ला' कहा जाता है। पंजाबी शैली में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में वस्तुतः रंगों से अधिक करतबों और कलाबाजियों का बोलबाला होता है।

बंगाल की होली– होली के अवसर पर बंगाल की 'दोल जात्रा' एक अत्यंत भव्य, आकर्षक और प्रसिद्ध आयोजन होता है। चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रूप में आयोजित होने वाले इस दोल जात्रा में जुलूस निकाल कर गाते-बजाते हुए लोग नगर भ्रमण करते हैं।

इनके अतिरिक्त होली के अवसर पर कुमाऊं में 'गीत बैठकी' होती है, जिसमें शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह कार्यक्रम होली के कई दिन पूर्व ही शुरू हो जाता है। हरियाणा में आयोजित 'धुलेंडी' में भाभियों के द्वारा देवरों को सताए जाने की प्रथा है। इसी प्रकार महाराष्ट्र की 'रंग पंचमी' में सूखा गुलाल खेलने की परंपरा है, जबकि गोवा के 'शिमरो' में जलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा तमिलनाडु की 'कमन पोडिगई' मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोत्सव है। इसी प्रकार मणिपुर के 'याओसांग' में योंगसांग उस नन्ही झोंपड़ी का नाम रखा जाता है, जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए होली सबसे बड़ा पर्व है। यहां के आदिवासी रंग-अबीर से होली मनाते हैं। ऐसे ही बिहार का 'फगुआ' भी बिहारियों के बीच जम कर मौज-मस्ती करने के लिए प्रसिद्ध है। इस दौरान बिहार में लोग द्वार-द्वार घूमकर होली के गीत जिसे 'फगुआ' कहते हैं, गाते हैं और रंग-अबीर से होली खेलते हैं। होली में यहां भांग आदि से बना एक विशेष पेय 'ठंडाई' पीने-पिलाने की परंपरा का पालन आज भी किया जाता है।

विदेशों में होली और इससे मिलते-जुलते पर्व

होली और इससे मिलते-जुलते पर्व का भारत में ही नहीं विश्व के अन्य कई देशों में भी मनाए जाते हैं। इस क्रम में सर्वप्रथम नेपाल, बंग्लादेश, श्रीलंका, सूरीनाम और मॉरीशस का नाम लिया जा सकता है, जहां लगभग भारतीय परंपरा के अनुरूप ही होली मनाई जाती है। इनके अतिरिक्त त्रिनिनाद एवं टोबैगो में भी फाल्गुन महीने में बड़े ही धूमधाम से होली का त्योहार मनाया जाता है। उल्लेखनीय है कि त्रिनिनाद एवं टोबैगो में भारतीय लोग बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। उल्लेखनीय है कि इन देशों में होली का त्योहार प्रमुखता से मनाया जाता है।

गुयाना की होली– गुयाना में होली के त्योहार को 'फगवा' के नाम से जाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बिहार का 'फगुआ' ही बिहारियों के साथ गुयाना पहुंचकर 'फगवा' बन गया। वैसे यहां भी बिहार की तरह होली का त्योहार बहुत ही जोर-शोर से मनाया जाता है। गुयाना में होली के महत्व को इसी से समझा जा सकता है कि इस दिन को यहां की सरकार की ओर से राष्ट्रीय अवकाश रखा जाता है।

फिज़ी की होली– फिज़ी में होली के अवसर पर लोक संगीत और नृत्य का भव्य आयोजन किया जाता है। इस दौरान गाया जाने वाला संगीत 'फाग गैयन' के नाम से जाना जाता है। इस अवसर पर लोग एक-दूसरे पर रंगों की बौछार कर होली खेलते हैं।

थाईलैंड की होली– थाईलैंड में होली का त्योहार 13 से 15 अप्रैल तक मनाया जाता है। इसे *सोंगक्रन* कहते हैं। यह सोंगक्रन संक्रांति से बना है, जो प्रकृति में बदलाव आने या कहें कि वसंत के आगमन का प्रतीक है। सोंगक्रन का अर्थ ही होता है परिवर्तन। वास्तव में यह थाई लोगों के लिए न्यू ईयर का अवसर होता है। इस दिन सड़कों के किनारे पानी से भरे कंटेनर रखे जाते हैं, जिसमें से पानी लेकर लोग एक-दूसरे पर डालते हैं। साथ में विविध रंगों से सुसज्जित हाथियों का झुंड भी होता है। ये हाथी कंटेनर से अपनी सूंड में पानी भरकर लोगों पर फेंकते हैं।

दक्षिण कोरिया की होली – दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल से 200 किलोमीटर दूर बोरेयोंग शहर में होली के समान त्योहार मनाए जाने की परंपरा है, जो कि *बोरेयोंग मड फेस्टिवल* के नाम से जाना जाता है। जुलाई में आयोजित होने वाला यह त्योहार बोरेयोंग में बड़े स्तर पर मनाया जाता है। इस अवसर पर कई *मड पूल* बनाए जाते हैं, जिनमें हजारों लोग कूदते और मिट्टी को अपनी-अपनी देह पर मलते और दूसरों पर फेंकते हैं। इस त्योहार की विशेषता है कि इसमें प्रयुक्त होने वाली मिट्टी में अनेक प्रकार के *मिनरल्स* भी मिले होते हैं। दो सप्ताहों तक चलने वाले इस त्योहार का मुख्य कार्यक्रम जुलाई के दूसरे सप्ताह के अंत में आयोजित किया जाता है।

इटली की होली– नॉर्दर्न इटली के आवरी शहर में फरवरी महीने में *बैटल ऑफ ऑरेंज* नाम से त्योहार आयोजित किया जाता है। यह त्योहार इटली में सर्दियों की समाप्ति और वसंत के आगमन का प्रतीक होता है। इस त्योहार का मुख्य आकर्षण यह होता है कि कुछ लोग हेलमेट व रंगीन चश्मा लगा वाहनों पर सवार होकर परेड में निकलते हैं, जबकि वहां मौजूद अन्य लोग उन पर संतरे फेंकते हैं।

ऑस्ट्रेलिया की होली– ऑस्ट्रेलिया के नॉर्दर्न इलाके में नॉर्थ-ईस्ट अर्नहेम लैंड पर *गार्मा* त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार ऑस्ट्रेलिया के योलगु आदिवासियों का साहित्यिक पर्व होता है, जिसमें लोग रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों से सुसज्जित होकर अपनी सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करते हैं।

दक्षिण अफ्रीका की होली– दक्षिण अफ्रीका की राजधानी केपटाउन में भी हमारी होली से प्रेरित होकर *होली वन* नामक एक त्योहार मनाया जाता है, जिसमें बहुत सारे लोग भाग लेते हैं।

अमेरिका की होली– अमेरिका के मिशिगन राज्य स्थित वेस्टलैंड के वेन काउंटी में प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाला होली समान कार्यक्रम *मिशिगन्स एनुअल मड डे* कहलाता है। इस कार्यक्रम का आयोजन जुलाई महीने में होता है। इस *मड डे* में 12 साल तक के अमेरिकी बच्चे भाग लेते हैं। इस अवसर पर गीली मिट्टी में अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है, जिसमें हजारों बच्चे दौड़ लगाने के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रकार की मजेदार गतिविधियों में भागीदार बनते हैं। इसी प्रकार अमेरिका के टेक्सस में *कलरजाम* नामक त्योहार मनाया जाता है, जिसमें लोग गीत और नृत्य

का आनंद लेते हुए एक-दूसरे पर रंग डालते हैं। ऐसे ही कभी फ्लोरिडा के एक कॉलेज में आरंभ हुआ *लाइफ इन कलर* नामक होली की तरह त्योहार अब पूरे विश्व में मनाया जाने लगा है। इसके अलावा हिप्पियों द्वारा मनाया जाने वाला *फेस्टिवल ऑफ कलर* नामक कार्यक्रम भी होली का ही एक रूप है। फेस्टिवल ऑफ कलर मनाते हुए ये हिप्पी लोग जमकर नाचते-गाते हैं।

स्पेन की होली– स्पेन के अलग-अलग राज्यों में विभिन्न अवसरों पर विविध रूपों में होली का त्योहार मनाया जाता है। लगभग पूरे वर्ष भर चलने वाले इन आयोजनों के क्रम में सर्वप्रथम बार्सिलोना स्थित विलानोवा इ ला जलजु पोर्ट पर मनाया जाने वाला *ला मेरेंगाडा* नामक त्योहार आता है, जिसका आयोजन प्रत्येक वर्ष फरवरी महीने में किया जाता है। पिछले 250 वर्षों से मनाए जाने वाले इस त्योहार को *कैंडी फाइट फेस्टिवल* भी कहा जाता है। इस त्योहार में भाग लेने वाले लोग एक-दूसरे पर अंडे व क्रीम से बनी पेस्ट्री फेंकते हैं। इसके बाद *ला टोमेटीना* नामक त्योहार की बारी आती है, जिसका आयोजन प्रत्येक वर्ष स्पेन के बनोल स्थित वालेंसिया नगर में होता है। सन् 1945 से लगातार मनाया जाने वाला यह त्योहार स्पेन के सबसे बड़े त्योहारों में एक है। अगस्त माह के आखिरी बुधवार को आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में लोग एक-दूसरे पर टमाटर फेंककर अपनी प्रसन्नता को प्रकट करते हैं। कालांतर में यह ला टोमेटीना स्पेन से निकलकर कई देशों तक फैलता चला गया। यही कारण है कि आज यह त्योहार यूरोप के अनेक देशों में मनाया जाता है।

इसी प्रकार स्पेन के ग्रांडा राज्य में 06 सितंबर को *कैस्केमोरेस फेस्टिवल* मनाया जाता है। इसमें स्पेन के दो शहरों गाडिक्स और गाजा के लोग 500 साल पुरानी परंपरा को निभाते हैं। ये लोग अपने शरीर पर तेल लगाकर दया की देवी *वर्जिन डि ला पिडाड* के लिए आपस में संघर्ष करते हैं। लोग एक-दूसरे पर काला पेंट और पानी फेंकते हैं। इसके अतिरिक्त स्पेन स्थित इबिजा के लोग होली से प्रेरित होकर *होली गार्डेन फेस्टिवल* का आयोजन भी करते हैं। ❑

–संस्कार, रोड नं. 3, विद्या नगर (पश्चिम), हरमू, रांची–834002, झारखंड

लड़कियां किसी से कम नहीं

–मानस

अनीषा आज सुबह से बहुत घबराई हुई थी। लगता था कि कंबल में ही दुबकी रहे। आपा की नजर भी उस पर न पड़े। वरना... ''अनीषा उठी नहीं बेटा?'' आपा ने आवाज़ लगाई। उनके साथ अब्बू ने भी स्वर मिलाया... चलो, बेटा देर हो रही है। ''उफ... अब तो उठना ही पड़ेगा। ये आपा-अब्बू अकेले क्यों नहीं चले जाते।'' अनीषा ने सोचा। फिर बोली, ''आपा, मेरे पेट में दर्द...।'' ''मुझे सब पता है। कोई दर्द-वर्द नहीं हो रहा। तुम्हें डर लग रहा है।'' आपा कमरे में दाखिल हो चुकी थीं, और मुस्कुरा रही थीं।

अनीषा समझ गई, उसकी चोरी पकड़ी गई। ''आपा, मुझे जाने की क्या जरूरत है। आप और अब्बू चले जाइए ना। मैं कोई छोटी बच्ची थोड़ी हूं कि घर पर अकेले नहीं रह सकती।'' वह बोली। ''छोटी बच्ची नहीं हो तभी तो अब तुम्हारे मन से डर निकलना चाहिए। तुम्हें तो फख्र होना चाहिए कि...।'' ''कि मेरी आपा देश सेवा करती हैं।'' अनीषा ने आपा की बात पूरी की, ''हां, मुझे फख्र है कि आप सीआईएसएफ में सीनियर ऑफिसर हैं, पर मुझे उसके वार्षिक समारोह में जाने की क्या जरूरत है।''

''पर हमें क्यों नहीं जाना चाहिए। सिर्फ इसलिए क्योंकि वहां जवान हथियार चलाने का प्रदर्शन करते हैं। आग पर काबू पाते दिखाई देते हैं। भई, यह सब तो हमारी ड्यूटी का हिस्सा हैं। इससे क्या घबराना।'' आपा ने कहा। ''आपको भी यह सब करना पड़ता है?'' अनीषा ने हैरानी से पूछा। ''और क्या... तीन महीने पहले जब मैं हवाई अड्डे पर तैनात थी, तो दो बदमाशों को मैंने बहुत आसानी से काबू में कर लिया था। पिछले साल एटॉमिक पावर प्लांट के पार्क में जब आग लगी थी, तब हमने ही तो मिलकर वह आग बुझाई थी। तब क्या हम घबराए थे?'' आपा ने कहा।

''पर आप तो बहुत नरम हैं। लोग कहते हैं कि लड़कियां

लड़कों के मुकाबले कमजोर होती हैं। आप कैसे बदमाश आदमियों से लड़ती हैं?'' अनीषा ने पूछा।

''देखो अनीषा, औरतें भले ही नाजुक और नरम नजर आती हैं, लेकिन असल में वे आदमियों से किसी मामले में कमजोर नहीं होतीं। कमजोरी सिर्फ मन में होती है। मन की कमजोरी दूर करो, तो तुमसे ताकतवर कोई नहीं होगा।'' आपा ने कहा, ''अच्छा चलो, तैयार हो जाओ। हमें जल्दी ही निकलना है।'' यह कहकर आपा चली गई। अनीषा भी तैयार होने के लिए उठ गई... ''कमजोरी सिर्फ मन में होती है।'' उसे आपा की बात याद आई- ''मैं क्यों मन से कमजोर हो रही हूं। उस दिन जब स्कूल में राघव जबरदस्ती दूसरी कक्षा के एक बच्चे को मार रहा था, तब मैंने भी उसे जोर से मुक्का मारा था। तब क्या मैं राघव से घबराई थी?'' उसने सोचा।

अनीषा अपने अब्बू के साथ पिछले साल ही दिल्ली आई थी। अम्मी के गुजरने के बाद अब्बू ने ही उसे और उसकी नूरी आपा की देखभाल की है। आपा सीआईएसएफ में ऑफिसर हैं और दिल्ली में रहती हैं। अनीषा पहली बार उनके साथ वार्षिक समारोह को देखने जा रही है। हथियार और गोला बारूद से वह बहुत घबराती है। लेकिन आपा से बात करके, अब उसे लग रहा है कि उसे घबराना नहीं चाहिए।

जल्दी-जल्दी तैयार होकर अनीषा बाहर आई। ड्राइवर भैया ने गाड़ी *स्टार्ट* कर दी थी। आपा पिछली सीट पर अनीषा के साथ बैठ गईं। अब्बू आगे बैठे थे। गाड़ी स्टार्ट होते ही अनीषा ने आपा से पूछा, ''आपा क्या आप मुझे सीआईएसएफ के बारे में बताएंगी? क्या आप लोगों को बहुत सारे बड़े-बड़े काम करने पड़ते हैं।''

आपा ने कहा, ''बड़े काम नहीं, बड़ी बहादुरी दिखानी पड़ती है। चलो, मैं तुम्हें जल्दी से इसके बारे में बताती हूं। सीआईएसएफ यानी केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल एक अर्धसैनिक बल हैं, इसका मुख्य कार्य सरकारी कारखानों एवं अन्य सरकारी उपक्रमों को सुरक्षा प्रदान करना है। ये बल देश के विभिन्न महत्वपूर्ण संस्थानों की भी सुरक्षा करता है। इस बल का गठन 1969 में हुआ था। आज इस बल की संख्या लगभग 1.50 लाख है। ये बल सरकारी उपक्रमों की सुरक्षा के अलावा देश की आंतरिक सुरक्षा, विशिष्ट लोगों की सुरक्षा, मेट्रो, परमाणु संस्थान और ऐतिहासिक धरोहरों आदि की भी सुरक्षा करता है।''

अनीषा हैरान होकर देख रही थी ''आपा हमारे देश में सेना के अलावा कई दूसरे सुरक्षा बल भी हैं।''

आपा, ने बताया, ''हां, देश में सात अर्धसैनिक बल हैं। चार भारत की सीमाओं की रक्षा करते हैं और तीन विशेष कार्य करते हैं। जैसे असम राइफल्स म्यांमार से लगी भारतीय सीमाओं की रक्षा करता है। सीमा सुरक्षा बल यानी बीएसएफ पाकिस्तान और बांग्लादेश से लगी भारतीय सीमाओं की रक्षा करता है। भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल यानी आईटीबीपी चीन से लगी सीमा की रक्षा करता है। सशस्त्र सीमा बल नेपाल और भूटान से लगी भारतीय सीमाओं की रक्षा करता है। सीआईएसएफ के बारे में तो तुमने जान ही लिया। दूसरा है केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल यानीसीआरपीएफ। यह कानून एवं व्यवस्था, जवाबी कार्रवाई, नक्सल और सांप्रदायिक हिंसा विरोधी अभियानों के लिए तैनात किए जाते हैं। एक एनएसजी यानी राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड भी है। यह बल आतंकवाद और विमान अपहरण की घटनाओं में जवाबी कार्रवाई करने तथा बंधकों को छुड़ाने के अभियानों में विशेषज्ञता प्राप्त होता है। इसके अलावा यह बल वीआईपी सुरक्षा तथा महत्वपूर्ण अवसरों पर सुरक्षा

प्रदान करने का काम करता है। सीमाओं की सुरक्षा करने वाले बलों को कभी-कभी उग्रवादियों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने और आंतरिक सुरक्षा के काम के लिए भी तैनात किया जाता है।''

अनीषा के लिए यह सब जानना बहुत दिलचस्प था। वह बोली, ''आपा, सीआईएसएफ में औरतें बहुत बड़ी संख्या में हैं ना...?''

''हां, सीआईएसएफ में आठ हजार से ज्यादा महिलाएं हैं। बीएसएफ में पांच हजार से ज्यादा और सीआरपीएफ में सात हजार से ज्यादा। यहां तक कि सीमा सुरक्षा बल में भी दो हजार से ज्यादा औरतें तैनात हैं। क्या इत्तेफाक है कि 8 मार्च को हम महिला दिवस मनाते हैं, और 10 मार्च को सीआईएसएफ का स्थापना दिवस मनाया जाता है। महिला दिवस के दो दिन बाद ही हम अपने स्थापना दिवस पर महिला अर्ध सैनिकों की बहादुरी को साक्षात देखते हैं।'' आपा ने बताया।

''महिला दिवस के बारे में भी तो बताइए ना आपा। मैं इसके बारे में ज्यादा नहीं जानती।'' अनीषा ने कहा। आपा ने मुस्कुराकर बताना शुरू किया ''अच्छा, चलो मैं तुम्हें इसके बारे में भी बताती हूं। सालों से दुनियाभर के लोग 8 मार्च को महिला दिवस मनाते आ रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एक मजदूर आंदोलन से उपजा था। 1908 में 15 हजार औरतों ने न्यूयॉर्क शहर में मार्च निकालकर नौकरी में कम घंटों की मांग की। इसके अलावा उनकी मांग थी कि उन्हें बेहतर वेतन दिया जाए और मतदान करने का अधिकार भी दिया जाए। एक साल बाद सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमेरिका ने इस दिन को पहला राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित कर दिया।''

''वैसे ये आइडिया एक औरत का ही था। क्लारा जेटकिन ने 1910 में कोपेनहेगन में कामकाजी औरतों की एक इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस के दौरान अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का सुझाव दिया। उस वक्त कॉन्फ्रेंस में 17 देशों की 100 औरतें मौजूद थीं। उन सभी ने इस सुझाव का समर्थन किया। सबसे पहले साल 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया था। 1975 में महिला दिवस को आधिकारिक मान्यता उस वक्त दी गई थी जब संयुक्त राष्ट्र ने इसे वार्षिक तौर पर एक थीम के साथ मनाना शुरू किया। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की पहली थीम थी *सेलीब्रेटिंग द पास्ट, प्लानिंग फॉर द फ्यूचर* कई देशों में महिला दिवस को राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा की जाती है। रूस और दूसरे कई देशों में इस दिन के आस-पास फूलों की कीमत काफी बढ़ जाती है। इस दौरान महिला और पुरुष एक-दूसरे को फूल देते हैं। चीन में ज्यादातर दफ्तरों में महिलाओं को आधे दिन की छुट्टी दी जाती है। वहीं अमेरिका में मार्च का महीना *विमेन्स हिस्ट्री मंथ* के तौर पर मनाया जाता है।''

अनीषा बोली, ''आपा, मैंने सुना है कि सरकार भी महिलाओं के लिए बहुत से कार्यक्रम चलाती है।''

आपा बोलीं, ''सरकार ने भी महिलाओं के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए हैं। जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ। इस योजना को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत से शुरू किया था। 100 करोड़ रुपये की शुरुआती राशि के साथ यह योजना देशभर के 100 जिलों में शुरू की गई। इस योजना का लक्ष्य लड़कियों को पढ़ाई के जरिए सामाजिक और वित्तीय तौर पर आत्मनिर्भर बनाना है। वन स्टॉप सेंटर स्कीम 1 अप्रैल, 2015 को 'निर्भया' फंड के साथ लागू की गई थी। यह योजना उन महिलाओं को सहारा देती है जो किसी प्रकार

की हिंसा का शिकार होती हैं। इसके तहत पुलिस डेस्क, कानूनी, चिकित्सा और परामर्श सेवाएं देने का काम किया जाता है। इस योजना के लिए टोलफ्री हेल्पलाइन नंबर 181 है। वर्किंग वुमन हॉस्टल योजना का उद्देश्य काम करने करने वाली महिलाओं के लिए सुरक्षित आवास उपलब्ध कराना है। महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम योजना का उद्देश्य महिलाओं को रोजगार संबंधी दक्षता प्रदान करना है। साथ ही यह कार्यक्रम महिलाओं को स्व-रोजगार करने के लिए सक्षम बनाता है। एक कार्यक्रम प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना है जिसके अंतर्गत गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली 2 करोड़ से अधिक महिलाओं को गैस सिलेंडर वितरित किए गए हैं।''

अनीषा आपा की बातें सुन-सुनकर खुश हो रही थी। वह बोली, ''जब सरकार महिलाओं के लिए इतना काम कर रही है तो मैं क्यों मन से कमजोर बनती हूं। आपा मैं चाहती हूं कि मैं भी बड़े होकर बहादुरी का काम करूं।''

आपा ने जवाब दिया, ''अनीषा, बहादुरी तो हर मोर्चे पर है। हर पेशे में है। तुम डॉक्टर बनकर लोगों की सेवा करो, तो क्या यह कम बहादुरी का काम है या पायलट बनकर हवाई जहाज उड़ाओ- यह भी हजारों लोगों की सेवा करना ही है। तुम जो भी पेशा अपनाओ, उसमें दिल लगाकर काम करो। अपना कर्तव्य निभाओ, यही जन सेवा और देश सेवा है। दरअसल जन सेवा ही देश सेवा है। हां! इसके लिए तुम्हें अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना होगा।''

''सही कहा आपा आपने। मैं बड़े होकर ही तय करूंगी कि मैं आगे क्या करूंगी। अभी तो सीआईएसएफ के जवानों की बहादुरी देखते हैं।'' अनीषा ने हंसकर कहा। कार समारोह स्थल पर पहुंच चुकी थी। आपा का हाथ थामे वह कार से उतरी तो गर्व से भरी हुई थी। ❑

-डी-116, सेक्टर-63ए,
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर,
(उ.प्र.)-201301

तेल बचाएं देश बढ़ाएं

-विजय के. सिंह

बात पते की समझें और समझाएं
स्वच्छ पर्यावरण वास्ते, तेल बचाएं वृक्ष लगाएं।
धूल, धुंआ, जहरीली गैसें, पी जाता है सारी
वृक्ष ऑक्सीजन हमको देकर रक्षा करे हमारी।
तेल कुदरत का 'काला सोना', वृक्ष है 'हरा सोना'
करें न इनका नाश
बेसमय अगर खत्म हुए तो
न हो पाएगा अपना वास।
पेड़-तेल की महिमा बहुत ही न्यारी
इनकी देख-रेख, रक्षा की सबकी जिम्मेदारी।
एक बूंद तेल, एक वृक्ष की भी होती अस्मिता
ये मन-मस्तिष्क से भूल न पाएं
पीढ़ियां कोसें न हमको कहीं
मित्रों, अस्तित्व सबका बचाते जाएं।
जीवन का वरदान स्वास्थ्य है
भूल न पाए ये जग सारा
तेल बचाएं, स्वास्थ्य बनाएं, देश बढ़ाएं
यही पैगाम हमारा।

-1385/13, गोविंद पुरी, कालका जी, नई दिल्ली-110019

पानी का सम्मान करें : राजेन्द्र सिंह

–राजेन्द्र सिंह

राजेन्द्र सिंह भारत के प्रसिद्ध पर्यावरण कार्यकर्ता है। इनका जन्म 6 अगस्त, 1959 को बागपत जिले के डोला गांव में हुआ। इन्होंने 1980 के दशक में पानी की समस्या पर काम करना शुरू किया और जल संरक्षण की प्राचीन प्रणाली को आधुनिक तरीके से अपना जगह-जगह छोटे-छोटे पोखर बनाने शुरू किए। शुरुआत में इनके कार्य को गंभीरता से नहीं लिया गया कि छोटे-छोटे पोखरों से भला कितने लोगों को फायदा होगा। किंतु इनके प्रयास से जल संचय का काम बढ़ता गया और धीरे-धीरे लोग भी इनसे जुड़ने लगे। फलस्वरूप साढ़े छह हजार से ज्यादा जोहड़ों का निर्माण हो चुका है और राजस्थान के करीब एक हजार गांवों में पानी उपलब्ध हो चुका है। पांच नदियां अरवरी, सरसा भगाणी, जहाजवाली और रूपारेल पुर्नजीवित हो लोगों को जीवनदान दे रही हैं।

'पानी बाबा' के नाम से लोकप्रिय राजेन्द्र सिंह जल संचयन और जल प्रबंधन में समुदाय आधारित प्रयासों के लिए 2001 में *रेमन मैगसेसे* से सम्मानित और 2015 में उन्हें *स्टॉक होम वाटर प्राइज़* जिसे पानी के लिए नोबेल पुरस्कार के रूप में जाना जाता है, से सम्मानित किया गया।

विश्व जल दिवस के अवसर पर *बाल भारती* की राजेन्द्र सिंह से हुई बातचीत हुई कुछ अंश...

मेरा जन्म यमुना और गंगा नदियों के बीच पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुआ जहां पानी की कोई कमी नहीं है। इसलिए पानी से ज्यादा मोह नहीं था, लेकिन जब में भारत सरकार में नौकरी में आया तो मेरी पहली पोस्टिंग जयपुर में हुई। मैंने चार साल काम किया। मैं डॉक्टर था। मुझे लगा कि जो काम मुझे करना चाहिए वह सरकार में रहकर नहीं कर रहा हूं, इसलिए मैंने इस्तीफा दिया और वहां चला गया जहां पानी की कमी से लोग उजड़ रहे थे, निराश हो गए थे। वहां रतौंधी की बीमारी थी। जवानों लोगों की रतौंधी तो ठीक हो जाती है, लेकिन बुजुर्गों की बीमारी ठीक नहीं होती। मैं बड़ा सौभाग्यशाली था कि मैंने छह-सात बुजुर्गों की बीमारी ठीक कर दी। मैं बड़ा खुश था, लेकिन एक दिन एक बुजुर्ग ने कहा- राजेन्द्र तूने मेरी बीमारी ठीक कर किसको फायदा पंहुचाया? पहले लोग मेरा मटका पानी से भर जाते थे, अब तो वे पानी भी नहीं लाते। तू आदमी का नहीं इस धरती का इलाज कर। वह ठीक हो जाएगी तो सब ठीक हो जाएगा।

काम की शुरुआत कैसे हुई?

मैंने जिस बुजुर्ग की आंखें ठीक की, उन्होंने मेरी ट्रेनिंग दो दिन में पूरी कर दी। उन्होंने एक दिन में मुझे

धरती की कोख की *सेंस* और *साइंस* सिखा दी। उन्होंने मुझे एक-एक करके के 25 सूखे कुओं में उतारा और खींचा। कुछ कुओं में मैं चरस (चमड़े के बैग) से नीचे उतरा मैंने दिखा कि कुओं में दो तरह की दरारें थीं। एक ऊपर से नीचे और दूसरी तिरछी होती थी। ऊपर से नीचे की तरफ आई दरारों में लम्बे पेड़ थे और उनकी जड़ें नीचे आई थीं। जबकि तिरछी दरारों में खाई नहीं थी। इससे जल संचयन के नियमों की जानकारी मिली। फिर उन्होंने बताया कि धरती के ऊपर कैसे पानी रोका जाता है। उन्होंने दो दिनों में सब सिखा दिया और मैं पानी पर काम करने लगा।

आपने लोगों को अपने साथ कैसे जोड़ा, आपका यह अभियान कैसे जनआंदोलन बना?

पहले लोगों को विश्वास नहीं हुआ। भारत में लोग आंखों से देखने में विश्वास करते हैं, कानों से सुने हुए पर नहीं। लेकिन गोपालपुरा में जब जोहड़ में पानी भर गया और लोगों ने अपनी आंखों से देखा तो लोगों में विश्वास जगा और लोग खुद काम करने लगे। पहले गोपालपुरा फिर बाडलवास फिर हमीरपुर में सूखे कुएं भरने लगे और आज मैं कह सकता हूं कि 1200 गांवों में लोग पानी वाले हो गए हैं। इन गांवों के कुओं में पानी भरने से सूखी और मरी हुई नदियों में पानी बहने लगा। सबसे महत्वपूर्ण था कि लोगों के अंदर एहसास जगाना और जब उन्हें जरूरत का एहसास हुआ तो पूरा समाज इस काम में जुट गया। इस काम की सच्चाई है कि इस काम के लिए लोगों ने सरकार से कोई पैसा नहीं लिया। पूरे कार्य में लोगों ने अपनी मेहनत और समर्पण से काम किया। राजस्थान में लोगों ने जितना पानी लिया उतना ही दिया। राजस्थान के वे लोग जो अशिक्षित कहलाते हैं, उनके मन में यह बात बैठ गई कि धरती से, इस प्रकृति से हम जितना लेते हैं उतना ही देंगे तो यह धरती हमें जीवित रखेगी।

राजस्थान के अलावा और कहां-कहां आपने जलसंरक्षण का कार्य किया?

हमने महाराष्ट्र में दो नदियों को जिंदा किया। एक का नाम है अग्रणी और दूसरे का नाम है महाकाली। एक नदी कर्नाटक के ईचनहल्ला में जिंदा की। लोगों ने बिना सरकारी मदद के अपनी समझ और शक्ति से यह कार्य किया और इस काम से इस काम से नदियां को पुर्नजीवन मिला।

बच्चों के लिए आपका क्या संदेश है?

21वीं शताब्दी में हम बच्चों को प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग की शिक्षा दे रहे हैं, इसके ठीक उलट राजस्थान के 1200 गांवों की अनपढ़ जनता ने अपनी धरती को पानीदार बनाया। इसलिए मेरा कहना है कि भारत को यदि अच्छी

शिक्षा देनी है तो बच्चों को प्रकृति से देने और लेने के रिश्ते की शिक्षा देनी चाहिए। नदियों से जितना पानी लेते हैं, उस पानी का अनुशासित होकर उपयोग करें, ठीक से बचाएं। सुबह दांत मंजन से पानी बचाना शुरू करना चाहिए, स्नान करने, कपड़े धोनें में पानी बचाएं। गंदे पानी को साफ पानी में कतई न मिलने दें। गंदे पानी को साफ करने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है।

भारत एक समय पानी के मामले में विश्वगुरु था। पानी के मामले में छह आर समझने जरूरी हैं। पहला आर से रिस्पेक्ट यानि सम्मान, घर में कोई आता है तो हम एक गिलास पानी पिलाकर उसका सम्मान करते हैं, बाहरी वातावरण से रक्षा करते हैं। दूसरा है रिफ्यूज यूज ऑफ वाटर यानि कम से कम पानी का इस्तेमाल करें और जितना इस्तेमाल किया उतना वापस भी लौटाएं। फिर रीट्रीट, रीसाइकिल रीयूज और रीजनरेट वाटर। ये तीन बाद वाले 'आर' सारी दुनिया में उपयोग होते हैं लेकिन कुल छह आर भारत के लोग जानते हैं।

विद्यार्थी इस 6 आर को समझेंगे तो फिर वे अपने भगवान को भी ठीक से समझ सकेंगे। भगवान का मतलब होता है- भ से भूमि, ग से गगन, व से वायु, अ से अग्नि एनर्जी यानी *सन-लाइट*, ये सब हमारी शक्ति हैं। ये भगवान हैं, इन्हें हम पंचमहाभूत कहते हैं। शिक्षा में हमारे विद्यार्थियों को हमें इन पंचमहाभूतों की जानकारी देनी चाहिए। ताकि अभी भी हम दुनिया को सिखाने के लायक बने रहें। हम भारत के लोग दुनिया को शिक्षा देने के लायक तब तक थे जब तब इन पंचमहाभूतों का हम सम्मान करते थे, जब तक हम पानी को बचाकर, कम से कम उपयोग करके उसकी कीमत को समझते थे। ये भी वक्त है जब हम भारत को पानीदार बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। भारत में हम पानी बचाने के लिए ये सब बातें समझे और पानी का सम्मान करें। ऐसी शिक्षा ग्रहण करे जिसमें पानी के साथ पवित्र रिश्ता कायम कर पानी को बचा सकें, तभी भारत पानीदार रहेगा। ❑

आवश्यक है सतर्क और जागरूक रहना

–आर. पी. रतूड़ी

पूरी दुनिया में 15 मार्च को उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है। लेकिन भला हमें इस दिन से क्या मतलब... उपभोक्ता कौन होता है। आप प्रश्न कर सकते हैं। तो, उपभोक्ता हम सब हैं। जैसे आप बाजार से सामान खरीदते हैं, तो आप उपभोक्ता बन जाते हैं। सामान कौन नहीं खरीदता, हमारे मम्मी-पापा से लेकर दीदी-नानी। स्कूल की अध्यापिकाएं, बस ड्राइवर्स, हमारे दोस्त... यहां तक कि टॉफी बेचने वाली आंटी भी। चूंकि सामान बेचने वाले भी तो कोई न कोई सामान खरीदते होंगे। सब्जी बेचने वाले साबुन खरीदते होंगे और साबुन बेचने वाले सब्जी। तो कुल मिलाकर हम सभी उपभोक्ता हैं, इसलिए उपभोक्ता दिवस हम सबके लिए मायने रखता है। पर यह मनाया क्यों जाता है?

साठ के दशक में अमेरिका के राष्ट्रपति थे, जॉन एफ कैनेडी। उस दौर में बाजार में सामान की भरमार थी लेकिन उन्हें खरीदने वालों की कोई सुनवाई नहीं थी। कोई कंपनी उनकी सुनती नहीं थी। तब अमेरिका में एक उपभोक्ता संगठन बनाया गया। उसके अभियानों से कैनेडी इतने खुश हुए कि उन्होंने 1962 में एक विधेयक संसद में पेश किया। इस विधेयक में प्रस्ताव था कि उपभोक्ताओं यानी ग्राहकों को भी अधिकार मिलें। जैसे ग्राहकों को सुरक्षा, सूचना प्राप्त करने का, चीजें चुनने का और अपनी सुनवाई का अधिकार मिलना चाहिए। इस विधेयक को संसद ने मंजूर कर लिया। इसके बाद लगभग 20 साल बाद उसी उपभोक्ता संगठन ने सोचा, क्यों न साल के एक दिन विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया जाए। इस खास दिन को मनाने का उद्देश्य यह था कि उपभोक्ताओं को बुनियादी अधिकारों के प्रति

जागरूक किया जाए। कैनेडी ने जिस दिन विधेयक संसद में पेश किया था, यानी 15 मार्च को, उसी दिन इस खास दिवस को मनाने का फैसला किया गया।

बेशक, ग्राहकों के भी अधिकार होते हैं। मान लीजिए कि आपने किसी दुकान से बिस्कुट का एक पैकेट खरीदा जिसके लिए आपने दस रुपए चुकाए। पर असल में उस पैकेट की कीमत है आठ रुपए। तो दुकानदार ने आपसे अधिक दाम वसूले। या फिर पैकेट पर बिस्कुटों का कुल वजन 100 ग्राम लिखा है। पर जब आपने तराजू से उस पैकेट का वजन किया तो उसमें 850 ग्राम ही बिस्कुट निकले। इसका मतलब यह है कि बिस्कुट बनाने वाली कंपनी आपसे धोखाधड़ी कर रही है। यह भी हो सकता है कि पैकेट पर उन बिस्कुटों को बनाने की तारीख और उनके खराब होने की तारीख, यानी एक्सपायरी डेट, न लिखी हो। इस तरह बिस्कुट बनाने वाली कंपनी खराब सामान भी बेच सकती है। बिस्कुट में मक्खन होना चाहिए। लेकिन वह मक्खन की बजाय खराब तेल का इस्तेमाल कर रही है। ऐसे में मिलावटी सामान बेचा जा रहा है। इन चार स्थितियों में आप क्या कर सकते हैं- इस बारे में जागरूकता फैलाना ही उपभोक्ता दिवस का काम है। दुनिया भर में तरह-तरह के संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता लोगों को इनसे जुड़ी बातें बताते हैं और बहुत सारी नई जानकारियां देते हैं।

विश्व के अलावा हमारे अपने देश में भी हर साल 24 दिसंबर को राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण दिवस मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं या ग्राहकों को उनके हितों के लिए बनाए गए उपभोक्ता संरक्षण कानून और उसके अंतर्गत आने वाले अधिकारों की जानकारी देना है। भारत में उपभोक्ता आंदोलन की शुरुआत 1966 में मुंबई से हुई थी। 1974 में पुणे में ग्राहक पंचायत की स्थापना के बाद अनेक राज्यों में उपभोक्ता कल्याण हेतु संस्थाओं का गठन किया गया और यह आंदोलन बढ़ता गया। 9 दिसंबर 1986 को सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण विधेयक पारित किया। यह कानून राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद देशभर में लागू हुआ। अब वर्तमान सरकार ने 2018 में उपभोक्ता संरक्षण विधेयक पेश किया है जोकि खराब वस्तुओं और सेवाओं में दोष से जुड़ी शिकायतों के निवारण की व्यवस्था करता है।

जब से मार्केट का स्वरूप बदला है, नए कानूनों की भी जरूरत हुई है। पहले आप सिर्फ बाजार जाकर सामान खरीद पाते थे, अब घर में बैठे-बैठे कंप्यूटर या फोन से इंटरनेट के जरिए सामान खरीदा जा सकता है। तो बाजार पहले सा नहीं रहा, वह फोन और कंप्यूटर के अंदर बंद है। या यूं कहिए इंटरनेट ने बाजार को पहले से भी बड़ा कर दिया है। हम देश से ही नहीं, विदेशों से भी सामान खरीद सकते हैं। ऐसे में हमारे अधिकार का क्या होगा। फिलहाल सरकार पिछले साल जो विधेयक लेकर आई है, उसमें टेलीशॉपिंग और इलेक्ट्रॉनिक तरीके से खरीदारी करने वाला भी उपभोक्ता कहलाता है। फिर अगर गलत सामान बेचा जाता है या खराब सर्विस दी जाती है तो सामान बनाने वाले ही नहीं,

सर्विस प्रोवाइडर और विक्रेता भी जिम्मेदार माना जाता है।

आज के दौर में उपभोक्ताओं को जागरूक होने की और भी जरूरत है क्योंकि अब उपभोक्ताओं का पर्सनल डेटा भी कंपनियों के पास है। जैसे हमने फोन इस्तेमाल करना शुरू किया। इसके लिए नंबर लेते समय अपना फोटो और पहचान से जुड़े दस्तावेज सर्विस प्रोवाइडर कंपनी को देने पड़ते हैं। फोन से खाना मंगवाने के लिए ऑनलाइन पेमेंट करने पर बैंक के डेबिट या क्रेडिट कार्ड के कुछ अंक बताने पड़ते हैं। इसलिए यह कोशिश भी की जा रही है कि इन स्थितियों में उपभोक्ता के अधिकारों की रक्षा हो। कंपनियों से कहा जा रहा है कि पर्सनल डेटा को जिस काम के लिए जमा किया जा रहा है, उस काम के खत्म होते ही डेटा को मिटा दिया जाए।

उपभोक्ताओं के जिन चार अधिकारों की बात सालों पहले की गई थी, उनमें कुछ अधिकार और जोड़े गए हैं। जैसे मुआवजा पाने का अधिकार। मतलब, अगर ग्राहक को खराब सामान या सेवा के कारण नुकसान हो तो उसका मुआवजा पाने का भी उसे अधिकार है। फिर उसे अधिकार है कि उसे उसके अधिकारों के बारे में शिक्षित किया जाए ताकि वह अधिक जानकार होकर फैसला करे। उसे स्वस्थ वातावरण प्राप्त करने का अधिकार है। जो सामान और सेवा वह खरीदेगा उसे पर्यावरण के लिहाज से अच्छा होना चाहिए। कार खरीदें, तो वह प्रदूषण फैलाने वाली न हो। ऐसा सामान मिले, जिससे बिजली की बचत हो। यूं यह ग्राहक का अधिकार ही नहीं, उसका कर्तव्य भी है कि वह ऐसा सामान खरीदे, जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो। ग्राहक के कुछ दूसरे कर्तव्य भी हैं। उसे सामान की क्वालिटी और गारंटी पर ध्यान देना चाहिए। सामान का बिल जरूर लेना चाहिए। अगर उसके अधिकारों का हनन हो तो संबंधित सरकारी कार्यालय को इसकी सूचना दें।

आइए, इस उपभोक्ता दिवस पर हम सब मिलकर एक सतर्क ग्राहक बनने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की शपथ लें। ❑

–मकान नंबर 15, नेहरू मार्ग, गली नंबर 14, आशुतोष नगर, ऋषिकेश, उत्तराखंड-249201

जीवन एक परीक्षा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 29 जनवरी, 2019 को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में छात्रों, अध्यापकों और अभिभावकों के साथ 'परीक्षा पर चर्चा' के तहत दूसरी बार बातचीत की। बातचीत का दौर करीब 90 मिनट तक चला। इस बार इस कार्यक्रम में देश भर से आए छात्रों, और विदेशों में रहने वाले भारतीय छात्रों ने भी हिस्सा लिया।

बातचीत के लिए माहौल तैयार करते हुए उन्होंने परीक्षा पर चर्चा को लघु भारत का रूप बताया। उन्होंने कहा कि यह भारत के भविष्य का प्रतीक है।

एक अध्यापक ने प्रधानमंत्री से प्रश्न किया कि अध्यापकों को उन अभिभावकों को क्या कहना चहिए, जो अपने बच्चों की परीक्षाओं को लेकर तनाव में रहते हैं और बेवजह उम्मीदें लगा बैठते हैं। इनके जवाब में प्रधानमंत्री ने उपस्थित जन समूह से कहा कि क्या परीक्षा जीवन की कोई परीक्षा है, अथवा वह किसी विशेष ग्रेड जैसे दसवीं अथवा बारहवीं कक्षा की परीक्षा है। उन्होंने कहा, जब एक बार इस संदर्भ को समझ लिया जाएगा, तो तनाव कम हो जाएगा।

प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि अभिभावकों को कभी भी अपने बच्चों से अपने अधूरे सपनों को पूरा करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। हर बच्चे की अपनी क्षमता और शक्ति होती है और हर बच्चे के सकारात्मक पहलू को समझना जरूरी है।

अभिभावकों के तनाव और अभिभावकों के दबाव को लेकर उनके सवालों का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि बच्चे का प्रदर्शन अभिभावकों के लिए परिचय कार्ड नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि यदि यह प्रयोजन बन जाएगा, तो अपेक्षाएं बेमतलब हो जाएंगी।

एक अभिभावक ने आशंका जताई कि उनका बेटा पहले पढ़ाई में अच्छा था, लेकिन ऑनलाइन गेम्स की वजह से अब वह पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहा है। इसके उत्तर में प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं नहीं समझता कि प्रौद्योगिकी से छात्रों का परिचय बुरी बात है, बल्कि यह अच्छी बात है, परंतु प्रौद्योगिकी से सोचने-विचारने का विस्तार होना चाहिए। प्ले स्टेशन अच्छा है, लेकिन इस कारण हमें खेल के मैदान को भूलना नहीं चाहिए।

समय प्रबंधन तथा थकान से संबंधित एक प्रश्न के उत्तर में प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के सभी 125 करोड़ लोग मेरे परिवार के सदस्य हैं। जब कोई व्यक्ति अपने परिवार के लिए कार्य करता है, तो वह थकान का अनुभव कैसे कर सकता है? उन्होंने कहा कि प्रत्येक दिन वह अपना कार्य नई ऊर्जा के साथ शुरू करते हैं।

छात्रों ने प्रधानमंत्री से पूछा कि अध्ययन को आनंददायक कैसे बनाया जा सकता है और परीक्षाएं किस तरह व्यक्तित्व को बेहतर बना सकती हैं? प्रधानमंत्री ने कहा कि सही भावना के साथ परीक्षाएं देना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि परीक्षाओं से

व्यक्ति मजबूत बनता है और इसे नापसंद नहीं किया जाना चाहिए।

छात्रों ने विषय व भविष्य चयन के संदर्भ में प्रधानमंत्री से सलाह पाने की इच्छा व्यक्त की। पर प्रधानमंत्री ने कहा कि विचारों की स्पष्टता और आत्मविश्वास आवश्यक तत्व है। विज्ञान और गणित आवश्यक हैं, परंतु अन्य विषयों में भी बहुत संभावनाएं हैं। बहुत सारे ऐसे क्षेत्र हैं, जहां अवसर उपलब्ध हैं।

छात्रों ने बच्चों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता के संबंध में प्रश्न किए। उत्तर में प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रतिस्पर्धा दूसरों के साथ नहीं, बल्कि अपने पिछले प्रदर्शन के साथ ही होनी चाहिए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी ज्ञान प्राप्ति को केवल परीक्षाओं तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। हमारी शिक्षा प्रणाली को हमें इस तरह सक्षम बनाना चाहिए कि हम जीवन की चुनौतियां का सामना कर सकें।

अवसाद या निराशा के संबंध में प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे राष्ट्र के लिए यह चिंता का विषय है। भारतीय संस्कृति में इसका सामना करने और इसे दूर करने के उपाय हैं। ❑

आज न छोड़ेंगे

–मोनिका अग्रवाल

हर साल की तरह इस साल भी काली बिल्ली होली में कुछ नया करना चाहती थी।

वह बहुत देर से इस बारे में सोच रही थी। लेकिन कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह अपने दोस्त शेरू कुत्ते के पास गई और उससे कोई नया आइडिया सोचने को कहा। दोनों बहुत देर तक सोचते रहे... सोचते रहे... तभी अचानक शेरू उछलते हुए बोला, ''मुझे एक आइडिया सूझा है।''

''क्या आइडिया सूझा है, जल्दी से बताओ?'' काली बिल्ली उत्सुकता से बोली।

''हम टॉम बंदर और चिक्की चूहे को कभी रंग नहीं लगा पाते। वह दोनों बहुत नटखट हैं। हर बार बच कर निकल जाते हैं। लेकिन इस बार उनको नहीं छोड़ेंगे। उनको रंग लगा कर ही मानेंगे।

''क्या तुम्हें लगता है कि हम ऐसा कर पाएंगे'' काली बिल्ली ने पूछा।

''हां...हां... सच में। सुनो कल होली है और मंगलवार भी!''

''हां तो फिर?''

''फिर क्या बुद्धू! दिमाग से सोच। कल टॉम बंदर मंदिर जाएगा। बस वहीं उसको घेर लेंगे।''

''और चिक्की?''

''भूल गई क्या? वह भी तो टॉम के साथ होता है। हम मंदिर के पास एक ड्रम छिपा कर रख देंगे और उसे फूल-पत्तियों से ढककर उस पर केले रख देंगे। जैसे ही टॉम केले खाने लपकेगा वह ड्रम में गिर जाएगा और जब चिक्की उसको बचाने आएगा, हम उसको भी ड्रम में धकेल देंगे।''

दोनों खुश होकर नाचने लगे, ''ओ... खेलेंगे हम होली!''

अगला दिन शुरू होने से पहले ही योजना के अनुसार पूरी तैयारी कर ली गई। ड्रम को फूल-पत्तियों से ढक दिया गया, ताकि टॉम सोच भी न पाए कि क्या योजना है?

होली के दिन वे दोनों घर से मंदिर जाने के रास्ते पर जा रहे थे कि सामने से म्यूनिसिपल वैन से उन्हें कुछ लोग उतरते हुए दिखे। ''शेरू, ये लोग तो हमें ही पकड़ने आ रहे हैं।''

''हां! भागो'' और सिर पर पैर रख दोनों भागने लगे।

''काली और तेज भाग अगर इस बार पकड़ में आ गए तो बहुत बड़ी मुश्किल में आ जाएंगे।'' दोनों मंदिर की तरफ भागने लगे। ''शेरू, यह सब से सुरक्षित जगह

मंदिर की सीढ़ियां चढ़ते हुए अचानक उनका पैर किसी रस्सी से अटका और दोनों का पैर फिसला और वे ड्रम में गिर गए।

जब दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा, तो पूरे रंगीन हो चुके थे।

वे दोनों उसी ड्रम में पड़े थे, जो उन्होंने टॉम और चिक्की के लिए ढका था। हड़बड़ी में उनको ध्यान ही नहीं रहा था।

''शिकारी खुद ही शिकार बन गए! हैप्पी होली।'' जोर से हंसने की आवाजें आ रही थीं।

दोनों ने देखा, तो सिर्फ टॉम ही नहीं चिक्की, मिक्की, कट्टो, सभी खड़े खिलखिला रहे थे। म्यूनिसिपल वैन के लोग तो तभी लौट गए थे और वे दोनों जब बदहवास से दौड़ रहे थे तो पीछे से उनके मित्रों ने ड्रम की जगह बदल दी थी।

एक बार फिर वे दोनों नाकाम हुए थे। लेकिन दोनों खुश थे कि शिकारी जा चुके थे और होली की मस्ती तो मस्ती है।

सब नाच-गा रहे थे, ''आज न छोड़ेंगे बस हमजोली... खेलेंगे हम होली।'' ❑

–कुमार कुंज, जीएमडी रोड, मुरादाबाद, (उ.प्र.)-244001

है'', अभी काली बोल ही रही थी कि, 'छपपपपक' आवाज आई।

एक वृक्ष यूं ही नहीं मर जाता

–ध्रुव सहगल

एक वृक्ष यूं ही नहीं मर जाता
धरती को जड़ से पकड़ वृक्ष तो सालों-साल है लहलहाता
हर आयु में शिक्षा देता वृक्ष कितना ज्ञान है बताता
एक वृक्ष तो कितनों का घर है कहलाता
एक वृक्ष यूं ही नहीं मर जाता

नन्हे से बूटे से वृक्ष बनने का सफर सुनो तो दिल भर आता
सड़क, दिवारों और पत्थरों से हर दम टकराता
कई बार काटे जाने पर भी जड़ से फिर उठ आता
एक वृक्ष यूं हीं नहीं मर जाता

धूप ना मिलने पर भी देखो कैसे लंबा होकर दिखाता
पानी ना मिलने पर और गहरा हो जाता
आंधी आए तो कैसे पत्ता-पत्ता जूझ जाता
देखो ये वृक्ष जीवन का सच है बताता
एक वृक्ष यूं ही नहीं मर जाता

बचपन से ही सीख संजोकर आया बूटा
लड़ता, छुपता, झुकता आंख मिचौली करता
पर यूं ही नहीं हार स्वीकारता
फिर उगकर दिखाता
एक वृक्ष यूं ही नहीं मर जाता

2/11, नेहरु एन्कलेव, कालका जी पुलिस स्टेशन, नई दिल्ली-110019

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

नमक सत्याग्रह

–जे.बी. कृपलानी

वैश्विक आर्थिक संकट भारत पर असर डाल रहा था। कृषि उत्पादों के दामों में भारी गिरावट आ गई थी। किसान संकट में थे। उन पर कर्ज़ का बोझ बढ़ रहा था और लगान चुकाने की उनकी क्षमता घट रही थी। उस स्थिति में उनके द्वारा गांधीजी के निर्देश के बिना भी लगान रोकने का अभियान चलाए जाने की संभावना प्रबल हो रही थी। लेकिन उनके नेतृत्व के बगैर कोई भी आंदोलन छेड़ना उन्हें अनावश्यक लग रहा था।

गांधीजी को कोई भी आदेश करने से पूर्व समूची स्थिति का जायज़ा लेना था। वे तैयारी कर रहे थे, प्रेस को इंटरव्यू आदि दे रहे थे तथा जनमानस को तैयार कर रहे थे। उन्होंने इच्छुक सत्याग्रहियों को निर्देशित करने के लिए नियम भी छाप दिए थे। उन्होंने 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस घोषित कर दिया और उसे देश भर में उत्साहपूर्वक मनाया गया। सब ओर सभाएं हुईं और तिरंगा फहराया गया और देश का लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्य के इतर 'पूर्ण स्वराज' घोषित किया गया। यह भी घोषणा की गई कि अब अंग्रेज हुकूमत के आगे और झुकना मनुष्य तथा ईश्वर दोनों के प्रति पाप माना जाएगा। स्वतंत्रता दिवस मनाने के आह्वान के प्रति जनता का उत्साह देखकर गांधीजी का मनोबल अत्यधिक पुष्ट हुआ। चार दिन बाद उन्होंने 11 सूत्रीय मांगपत्र प्रकाशित किया, जो कि उनके अनुसार स्वतंत्रता का सार होगा। यह सूत्र थे: शराब के व्यापार की समाप्ति, रुपए का पुनर्मूल्यन, सेना एवं नौकरशाहों के वेतन में कटौती, लगान की दरों में 51 प्रतिशत कटौती, विदेशी कपड़े के आयात पर संरक्षणात्मक शुल्क, सीआईडी की समाप्ति, राजनैतिक बंदियों की रिहाई और भारतीयों को आग्नेयास्त्र रखने की अनुमति। कार्यक्रम हरेक वर्ग के लोगों के अनुकूल था।

वे मार्च तक पूरी तरह तैयार थे। उन्होंने नमक सत्याग्रह के लिए अपनी योजना बना ली थी। सत्याग्रहियों द्वारा अहितकर नमक का कानून तोड़े

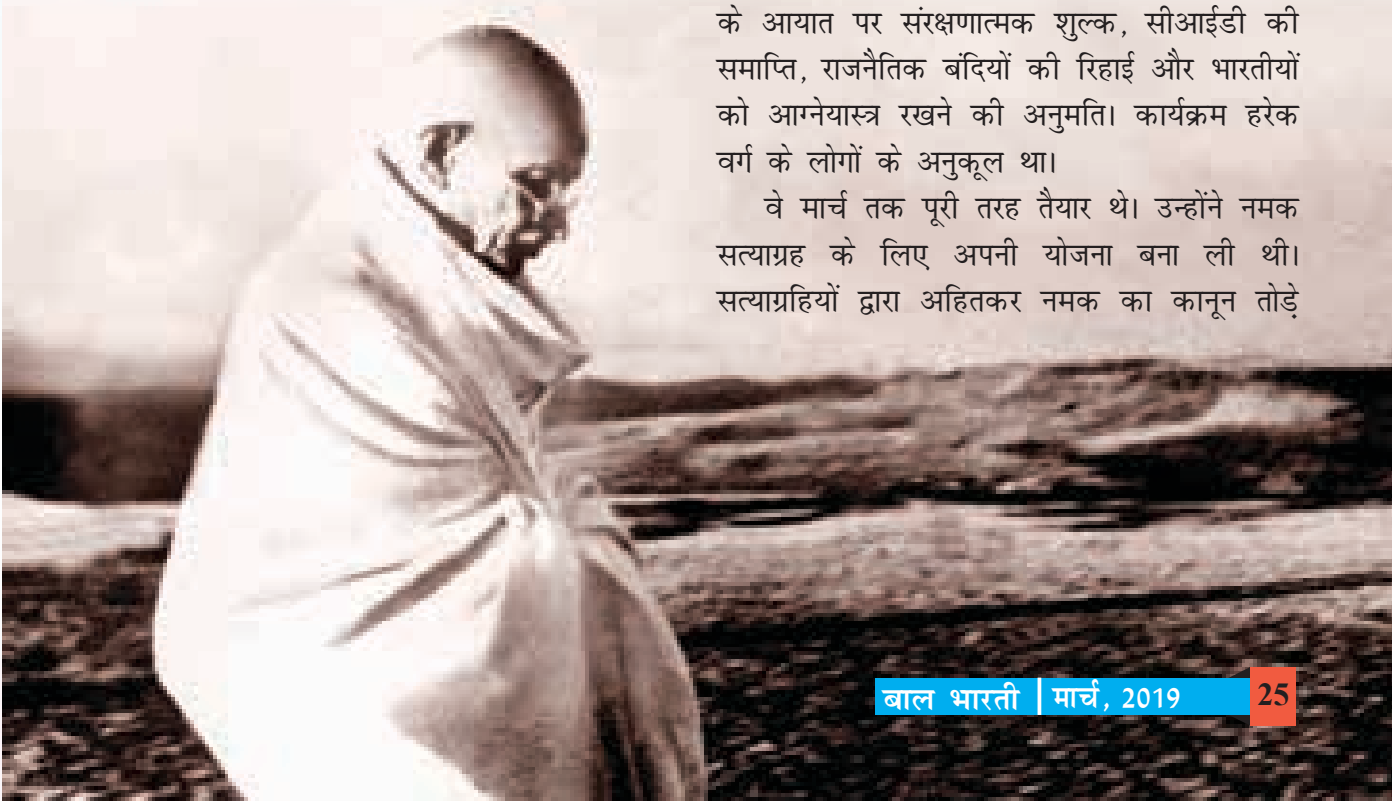

जाएंगे, नमक का उत्पादन किया जाएगा और नमक के सरकारी गोदामों का घेराव किया जाएगा। वे इस चरण में भी टकराव से बचना चाहते थे, भले ही वह अहिंसक हो। उन्होंने ग्यारह मांगों का उल्लेख करते हुए लॉर्ड इरविन को पत्र भेजा।

वायसराय ने पत्र की उपेक्षा की और उनके सचिव ने गांधीजी को चार लाइन का एक पत्र भेज दिया। दिल्ली में उच्च सरकारी हलकों में गांधीजी की नमक सत्याग्रह की योजना का मज़ाक उड़ाते हुए उसे पागल की सनक बताया जा रहा था। कांग्रेस के नेता भी उनके अभियान की सफलता के प्रति शंकित थे। लेखक को यह बताया भी गया कि नमक विभाग के अधिकारियों से पता चला है कि गांधीजी और उनके अनुयायी नमक भले ही बना लें मगर नमक के राजस्व पर तीन साल तक कोई असर नहीं पड़ेगा। इन सब शंकाओं के बावजूद अंततः सब लोग गांधीजी के साथ खड़े हो गए।

12 मार्च को आश्रम के 78 चुनिंदा एवं प्रशिक्षित सदस्यों के साथ गांधीजी ने समुद्र की ओर कूच किया। अपने कूच से पूर्व उन्होंने लोगों से उनके समुद्र तट तक पहुंचने तथा नमक उठाने तक इंतजार करने का अनुरोध किया था। उसके जिसके लिए भी संभव हो उसे नमक बनाना चाहिए और सरकार द्वारा उस पर लगाई गई रोक का उल्लंघन करना चाहिए। समुद्र तट पर दांडी की साबरमती से दूरी लगभग 385 कि.मी. है। सत्याग्रहियों की इस सेना के पास कोई हथियार नहीं थे। उनका युद्ध का बैंड तंबूरा था और युद्धघोष भक्ति संगीत था। गांधीजी और उनका सत्याग्रही दल 12 मार्च से 5 अप्रैल तक गांव दर गांव चलता रहा। वे जहां से भी गुजरे लोगों ने स्नेहपूर्वक झंडों और मालाओं से उनका स्वागत किया। गांधीजी ने सभी ओर सभाओं को संबोधित किया और भीड़ सवेरे-शाम उनकी प्रार्थना सभाओं में जुटनेवाली भीड़ से भी अधिक बढ़ती चली गई। हजारों लोग उनके साथ शामिल होते गए। स्थानीय प्रशासन चरमराने लगा। लगभग 400 गांवों के मुखियाओं ने इस्तीफा दे दिया। सरोजिनी नायडू भी रास्ते में दल में शामिल हो गईं।

गांधीजी और उनके चुनिंदा लोगों के दिनोंदिन आगे बढ़ते जाने से भारत भर में लोगों का उत्साह भी बढ़ने लगा। वे लोग अधीरता से दांडी तट पर गांधीजी द्वारा नमक उठाए जाने का इंतजार कर रहे थे ताकि वे भी नमक बना सकें। आंदोलन का मज़ाक उड़ा चुके अधिकारी अब आशंकाग्रस्त हो गए। उन्होंने दमन की नीति अपनाने का फैसला किया।

गांधीजी 6 अप्रैल को तड़के ही तट की ओर कूच कर गए जहां नमक के चट्टे लगे हुए थे और अवैध रूप से मुट्ठी में नमक भरकर उसे हवा में लहराया ताकि सब लोग देख लें। वे उसी क्षेत्र में रहकर तब तक अपना कार्य करते रहे, जब तक उन्हें रोका नहीं गया। 4 मई की आधी रात को गिरफ्तार होते ही व्यापक हड़ताल हो गई। बंबई (मुम्बई) की सूती मिलें और रेलवे वर्कशॉप बंद हो गए। शोलापुर में कामगारों ने मार्शल लॉ की अवहेलना की तो प्रशासन ने क्रूरतापूर्वक उन्हें दबाया तथा गोलीबारी में 25 लोगों को मौत के घाट उतार दिया। लेकिन आंदोलन पूरे देश में फैल चुका था। नेताओं सहित हजारों लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। असेंबली के सदस्यों ने इस्तीफे दे दिए थे। सबसे अधिक दमन उत्तर-पूर्वी सीमांत प्रांत में अहिंसक पठानों, खुदाई खिदमतगारों का किया गया। गफ्फार खां की गिरफ्तारी के बाद अहिंसक सत्याग्रहियों के जत्थे के जत्थे–महिला, पुरुष और बच्चे–गोलीबारी के आगे डटते चले गए। उन्होंने सीना उघाड़ कर प्रशासन को चुनौती दी कि वह जो चाहे कर ले। पेशावर में गोलीबारी घंटों जारी रहा, जिसमें भारी संख्या में लोग हताहत हुए। गढ़वाल बटालियन ने अंततः बेरहमी से मारे जा रहे निहत्थे लोगों पर गोली चलाने से इनकार

कर दिया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें कोर्ट मार्शल झेलना पड़ा और उनमें से अनेक को दस से पंद्रह वर्ष का कारावास भुगतना पड़ा।

गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद सत्याग्रहियों का दमन और भी बढ़ गया। गांधीजी के साथ गए सत्याग्रहियों ने फिर निकटस्थ नमक डिपो धरासना पर छापा मारने का फैसला किया। सत्याग्रहियों जत्थे के जत्थों ने धरासना की ओर कूच शुरू कर दिया जहां पर हथियारबंद पुलिस उनकी अगवानी के लिए तैनात थी। उन्हें बेरहमी से पीटा गया लेकिन किसी ने लाठी को रोकने के लिए भी हाथ नहीं उठाया। पहले दिन 320 घायल हुए और दो लोगों की मृत्यु हो गई। अपनी पुलिस द्वारा इस बर्बरता की रिपोर्ट इरविन ने यह भेजी कि 'नमक विभाग का युद्ध' उलझता जा रहा है और घायल लोग 'स्वांग' कर रहे हैं।

उसी बीच गुजरात के बोरसाड में ग्रामीणों ने स्वयं ही 'लगान नहीं' अभियान आरंभ कर दिया। पुलिस ने उनके दमन की नवीन तकनीक ईजाद की। लाठीचार्ज और गिरफ्तारी के अलावा वे नेताओं को लोहे के पिंजरों में बिना कोई मुकदमा चलाए ही बंद करने लगे। इतने अधिक दमन से बचने को अंतत: सभी निवासी गांव खाली कर गए। जून में कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया। सत्याग्रह आरंभ होने के बाद पहले महीने में जहां 60,000 लोग गिरफ्तार हुए थे, वहीं अब यह संख्या और भी बढ़कर 1,00,000 हो गई थी।

इरविन को अंतत: यह अहसास हो गया कि गांधीजी का नमक सत्याग्रह कोई 'विचित्र' अंतराल नहीं बल्कि लंबी लड़ाई है। उनका कार्यकाल समाप्त होने वाला था इसलिए वे, यदि संभव हो तो, गांधीजी से बातचीत करना चाहते थे। उन्होंने डेली हैराल्ड के प्रतिनिधि जॉर्ज स्लॉकॉम्बी के माध्यम से उन्हें जेल में समझाने का प्रयास किया, जो वहां उनका साक्षात्कार करने गए थे। उसके बाद गांधीजी से सप्रू और जयकर भी मिलने गए। उन्होंने, उन लोगों से कहा कि वे कार्यसमिति के सदस्यों से विचार-विमर्श किए बिना कुछ नहीं कह सकते। वल्लभभाई पटेल, सरोजिनी नायडू और जयरामदास वहां पहले से ही थे। मोतीलाल और जवाहरलाल को उनसे मिलने के लिए संयुक्त प्रांत की जेलों से यरवदा लाया गया। जेल में गांधीजी एवं कार्यसमिति के अन्य सदस्यों के बीच बैठक कराई गई। आपसी विचार-विमर्श के बाद वायसराय को पत्र भेजा गया, जिसमें सदस्यों ने बिना अनुकूल शर्तों के समझौते में किसी जल्दबाजी का प्रदर्शन नहीं किया। पत्र में सत्ता के हस्तांतरण तथा (भारत के) विलगन के अधिकार संबंधी शर्तों का उल्लेख किया गया था। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'गांधी - जीवन और दर्शन' से साभार

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च, 1914 को गांव टिगरिया, तहसील सिवनी मालवा, जिला होशंगाबाद (म.प्र.) में हुआ था। वह हिंदी के प्रसिद्ध कवि तथा गांधीवादी विचारक थे और वे दूसरे तार-सप्तक के एक प्रमुख कवि हैं। गांधीवाद की स्वच्छता, पावनता और नैतिकता का प्रभाव तथा उसकी झलक उनकी कविताओं में साफ देखी जा सकती है। उनका प्रथम संग्रह *गीता-फरोश* अपनी नई शैली, नए विचारों और नए पाठ-प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ था। इनका निधन 20 फरवरी 1985 को हुआ।

अक्कड़ मक्कड़

–भवानी प्रसाद मिश्र

अक्कड़ मक्कड़, धूल में धक्कड़,
दोनों मूरख, दोनों अक्खड़,
हाट से लौटे, ठाठ से लौटे,
एक साथ एक बाट से लौटे।

बात-बात में बात ठन गई,
बांह उठीं और मूछें तन गईं।
इसने उसकी गर्दन भींची,
उसने इसकी दाढ़ी खींची।

अब वह जीता, अब यह जीता;
दोनों का बढ़ चला फ़जीता;
लोग तमाशाई जो ठहरे
सबके खिले हुए थे चेहरे।

मगर एक कोई था फक्कड़,
मन का राजा कर्रा - कक्कड़;
बढ़ा भीड़ को चीर-चार कर
बोला 'ठहरो' गला फाड़ कर।

अक्कड़ मक्कड़, धूल में धक्कड़,
दोनों मूरख दोनों अक्खड़,
गर्जन गूंजी, रुकना पड़ा,
सही बात पर झुकना पड़ा।

उसने कहा सधी वाणी में,
डूबो चुल्लू भर पानी में;
ताकत लड़ने में मत खोओ
चलो-भाई चारे को बोओ!

खाली सब मैदान पड़ा है,
आफ़त का शैतान खड़ा है,
ताकत ऐसे ही मत खोओ,
चलो-भाई चारे को बोओ।

सुनी मूर्खों ने जब यह वाणी
दोनों जैसे पानी-पानी
लड़ना छोड़ा अलग हट गए
लोग शर्म से गले छट गए।

सबको नाहक लड़ना अखरा
ताकत भूल गई तब नखरा
गले मिले तब अक्कड़-बक्कड़
खत्म हो गया तब धूल में धक्कड़

अक्कड़ मक्कड़, धूल में धक्कड़
दोनों मूरख, दोनों अक्खड़।

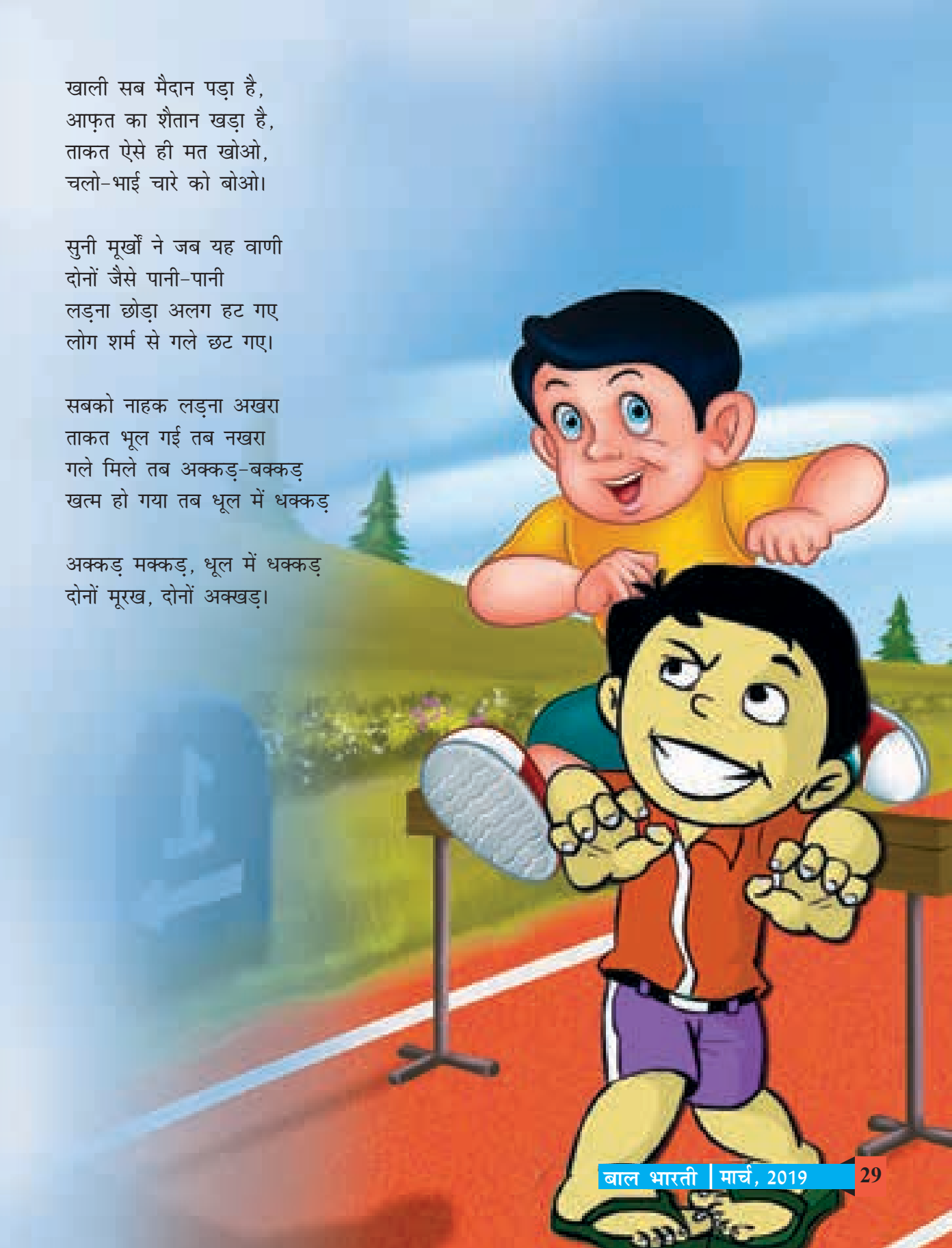

पानी का प्रबन्धन

चित्रकथा :
परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव

अगले पेज पर.....

विश्वम और माधव को बहुत मजा आ रहा था। माधव ने देखा यहां गांव में पानी की किल्लत नहीं है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, यह देखकर पिंटू अंकल ने बताया कि हम लोग पानी का प्रबंधन करते हैं। यह कहकर पिंटू अंकल ने दिखाया –

वह देखो गांव के बीच में एक पानी का बोर लगा हुआ है, इसमें नर्मदा नदी का पानी हर दूसरे दिन आता है। मतलब एक दिन छोड़कर। इससे गांव में पानी की सप्लाई होती है और हम लोग अपनी आवश्यकतानुसार पानी का भंडारण करते हैं जिसके लिए जमीन में एक टैंक बनवाकर रखते हैं, जिसमें जल का भंडारण करते हैं तथा बाकी अन्य कार्यों के लिए जैसे पीने हेतु पानी अलग मिट्टी के घड़ों में रखते हैं।

वह तो हमारे यहां भी होता है। फिल्टर में पीने योग्य पानी रहता है बाकी अन्य आवश्यकताओं हेतु जल छत पर रखी टंकी में रहता है।

पिंटू अंकल मुस्कराए और बताया कि जल का प्रबंधन कैसे किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि –

हम लोग रसोईघर में सब्जी धोने के बाद या आंगन धोने के बाद जल को बर्बाद नहीं करते बल्कि उस जल से हमलोग नाली के रास्ते घर के आस–पास छोटी–छोटी क्यारियों में जिसमें सब्जी के पौधे व अन्य प्रकार के पौधे होते हैं, उनकी सिंचाई करते हैं।

देखो नहाते समय हमलोग पानी का कैसे प्रबंधन करते हैं।
अरे! यह तरीका तो वाकई में पानी को बेकार न होने का कारगर उपाय है भाई वाह! ऐसा ही कुछ मैंने इंटरनेट पर जापान देश में देखा है वहां के लोग वॉश बेसिन का पाईप अपने टॉयलेट के टैंक से जोड़ देते हैं और उस पानी का उपयोग फ्लश करने में किया जाता है, वाह!
विश्वम और माधव के साथ सभी लोगों ने देखा कि एक व्यक्ति चारपाई पर बैठकर नहा रहा है। चारपाई उस विशेष कमरानुमा जगह पर रखी गई है जहां जानवरों को खड़ा कर नहलाया जाता है। उसी पानी से जानवरों को नहलाकर वहां बनी नालियां को खोल दिया जाता है ताकि वह पानी आस–पास के पौधों को सींच सके।
पिता जी भी बोले कि हमलोग छोटे–छोटे तरीकों से पानी बचा सकते हैं जैसे– बेकार जल को बर्बाद न होने दें। घर की सभी नल की टोटियों को चेक करते रहें कि पानी टपक तो नहीं रहा है, कुल्ला करते समय व शेविंग करते समय नल को खुला न रखें। कार, बाईक या साइकिल को पानी से न धोएं बल्कि गीले कपड़े से पोंछकर पानी का उचित प्रबंधन कर सकते हैं। पानी का पूरा गिलास पिएंगे या जूठा पानी नहीं छोड़ेंगे। बाल्टी से नहाएंगे, शॉवर का इस्तेमाल करने के बाद, आर. ओ. फिल्टर का बहते हुए जल का भंडारण करके शौचालय व अन्य कार्यों के लिए प्रयोग करेंगे।

अगले पेज पर.....

और फिर उसी दिन से कच्छ का रण घूमने के साथ ही जल की बचत शुरू हो गई। बच्चों ने ध्यान देकर पानी का प्रबंधन शुरू किया। कपड़े धोकर बचे पानी से नाली की सफाई, पोंछा लगाना, कार की सफाई का कार्य होने लगा। अब बदलाव दिखाई देने लगा था। अब उन्होंने अपनी एक टोली बना ली थी। अपनी टोली के साथ प्यासे पक्षियों हेतु छोटे–छोटे मटके कॉलोनी के पेड़ों पर बांधे, हर एक बच्चों ने अपनी–अपनी जिम्मेदारी ले रखी थी। अब कहीं भी पानी की किल्लत नहीं दिख रही थी।
वाह पानी का प्रबंधन करना कितना कारगर है यह कार्य हम सभी अपने स्तर पर कर सकते हैं।
समाप्त

पॉपकार्न, जिसके सभी हैं दिवाने

–विनोद गुप्ता

बात चाहे थियेटर में फिल्म देखने की हो या स्टेडियम में क्रिकेट मैच देखने की, अथवा किसी पिकनिक स्पॉट पर घूमने की, पॉपकार्न के बगैर अधूरापन लगता है और उसे देखते ही खाने का मन करने लगता है।

पॉपकार्न मक्का को भाड़ या मशीन में फोड़कर बनाई जाने वाली धानी है। भाड़ में इसे गर्म रेत में डालकर फोड़ा जाता है जबकि मशीन में ये गर्मी पाकर स्वयं फूटते हैं। गैस अथवा इंडक्शन पर इसे कढ़ाई या कुकर में भी तैयार कर सकते हैं। माइक्रोवेव आवेन में भी ये तैयार किए जा सकते हैं। स्वाद के लिए इसमें नमक, हल्दी, थोड़ा मसाला डालकर ऊपर से थोड़ा सा तेल गर्म करके मिला देते हैं ताकि मसाला ठीक से चिपक जाए। फिर इन्हें पोलिथिन की थैलियों या कागज़ के पैकेटों में पैक करके बेचा जाता है।

पॉपकार्न स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहतमंद भी है। यह पाचन शक्ति को दुरूस्त करता है। इससे वजन कम होता है। यह पेट के कैंसर में भी लाभदायक है। कुपोषण और विटामिन ए की कमी के कारण ज्यादातर विकासशील देशों में बच्चों की नजर कमज़ोर पड़ जाती हैं, इस समस्या के हल के लिए ब्रिटेन के दो वैज्ञानिकों ने मक्के की एक खास किस्म तैयार की है, इसमें कैरोटेनॉइड्स है, जो शरीर में विटामिन ए के रूप में बदल जाते हैं। मक्के की अन्य किस्मों में बीटा कैरोटीन रहता है। यह विटामिन ए की प्रतिपूर्ति कर देता है, लेकिन इसकी मात्रा बेहद कम होती है। ब्रिटिश एग्रीकल्चर सर्विस के वैज्ञानिकों मैरिलिन वारबर्ब्न और एडवर्ड बकलर ने मक्के की एक किस्म का जेनेटिक मॉडिफिकेशन कर उसमें बीटा-कैरोटीन का स्तर 18 गुना बढ़ा दिया। मक्के की इस किस्म को खाने पर बच्चों के शरीर में विटामिन ए की कमी दूर होगी।

पॉपकार्न में अच्छी मात्रा में प्रोटीन होता है, जो कि मांसपेशियों को पुष्ट और मजबूत करता है। बढ़ती उम्र के बच्चे खासकर किशोरों के लिए यह बहुत लाभदायक है।

पॉपकार्न में फाइबर यानी रेशे होते हैं जो कि शरीर के लिए बहुत लाभदायक हैं। इससे बेरी-बेरी नामक रोग से बचाव होता है। थकान और कमजोरी दूर होती है। मुंह की स्वच्छता और स्वस्थता के लिए

भी विटामिन बी काम्प्लेक्स आवश्यक है। जीभ और मसूड़ों के लिए यह विटामिन जरूरी है।

पॉपकार्न में पॉली फेनोलिन यौगिक होते हैं जो कि एंटीऑक्सीडेंट का काम करते हैं। यह कैंसर करने वाले फ्री केमिकल्स से मुक्ति दिलाता है।

स्क्रैटन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि पॉपकार्न में फलों और सब्जियों से कहीं ज्यादा एंटीऑक्सीडेंट या शरीर से बीमारी को दूर रखने वाले तत्व होते हैं। पॉपकार्न में फाइबर भरपूर मात्रा में होते हैं और वसा या फैट बहुत कम होते हैं। एंटीऑक्सीडेंट की अधिक मात्रा शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। यहां तक कि दिल की बीमारी से भी बचाती है।

हृदय के लिए भी पॉपकार्न निरापद है। यह कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखता है। परिणामस्वरूप हृदय रोगों से बचाव होता है।

डायबिटीज में भी यह लाभदायक है। इसके फाइबर ब्लड शुगर को कंट्रोल करते हैं। इसलिए मधुमेह के रोगी भी इसे आसानी से खा सकते हैं। ❑

–43/2, सुदामानगर, रामकेटरी, मन्दसौर (म.प्र.)

चलकर प्यारे

–जियाउर रहमान जाफ़री

सुबह-सवेरे उठकर प्यारे
काम करो कुछ बढ़कर प्यारे
इतनी सुस्ती ठीक नहीं है
कदम बढ़ाओ चलकर प्यारे
काम करो कुछ नया अगर तो
काम करो तुम बेहतर प्यारे
तुमसे न तकलीफें पहुंचे
बनो न कंकड़-पत्थर प्यारे
सुबह जब आंख खुले तो
खुद तह कर लो बिस्तर प्यारे
पापा-मम्मी-आंटी सबकी
हाथ बंटाओ घर पर प्यारे
साफ-सफाई बहुत जरूरी
काट न खाए मच्छर प्यारे
कर लो पेपर की तैयारी
सही-सही दो उत्तर प्यारे
करो कुछ ऐसा नाम हो रोशन
पूरब, पश्चिम, उत्तर-दक्षिण प्यारे

–हाई स्कूल माफी, वाया-अस्थावां, जिला नालंदा 803107, बिहार

उपन्यास अंश

पिंकू के कारनामे

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास प्रसिद्ध लेखक कार्लो कालोदी के मूल इतालवी उपन्यास *द एडवेंचर्स ऑफ पिनोकियो* का हिंदी रूपांतर है। पिनोकियो एक कठपुतले की कहानी है। इस उपन्यास का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसका रूपांतर *विश्वनाथ गुप्त* ने *पिंकू के कारनामे* के नाम से बड़ी सहज और सरल भाषा में किया है।

गतांक से आगे...

कुछ ने गर्दन और कुछ ने मेरे पैरों की खाल चबा ली। उनमें से एक मछली तो इतनी विनम्र थी कि उसने मेरी पूंछ को ही खाना ठीक समझा।

यह वर्णन सुनकर खरीददार कांप उठा। बोला-बाप रे! मैं तो कसम खाता हूं कि मैं भविष्य में कभी मछली नहीं खाऊंगा। न जाने किस मछली के पेट में गधे की पूंछ निकल आए।

...तुम ठीक कह रहे हो।... पिंकू ने हंसते हुए कहा-तो मैं तुमसे कह रहा था कि उन मछलियों ने मुझे इस प्रकार खाना शुरू कर दिया। जब उन्होंने सिर से पैर तक मेरी खाल तक चबा डाली, तो वे हड्डियों पर आ गई। लेकिन कुछ देर तक मुंह मारने के बाद उनको पता चल गया कि उसको खाना उनके बस की बात नहीं थी। तब वे विचित्र प्रकार के मुंह बनाकर वहां से इतनी फुर्ती से चली गई कि मुझे धन्यवाद देना भी भूल गईं। खैर, उसके बाद तुमने मुझे खींचा और तुम्हें गधे के स्थान पर एक कठपुतला दिखाई पड़ा।

...मुझे तुम्हारी कहानी पर हंसी आती है... उस आदमी ने कहा-मैं तो सिर्फ यही जानता हूं कि मैंने तुम्हारे लिए पांच रुपए खर्च किए थे और मैं अपने रुपए वापस चाहता हूं। इसलिए जानते हो, मैं क्या करूंगा? मैं तुम्हें बाजार में ले जाकर ईंधन के रूप में बेच दूंगा।

... अगर तुम्हारी ऐसी इच्छा हो, तो ऐसा ही करो... पिंकू ने कहा और यह कहते ही उसने पानी में छलांग लगाई और वह तैरता हुआ कुछ दूर चला गया।

फिर रुककर वह बोला... नमस्ते स्वामी! अगर आप मेरी खाल से ढोल बनाना चाहें, तो मुझे याद रखिएगा।

यह कहकर वह फिर हंसते-हंसते कुछ आगे बढ़ गया। थोड़ी दूर और जाकर वह फिर

रुका और जोर से बोला- नमस्ते मालिक! अगर आपको बढ़िया ईंधन की जरूरत हो तो मुझे याद रखिएगा।

इसके बाद वह तैरता हुआ दूर निकल गया और उस आदमी की आंखों से ओझल हो गया। पिंकू को मालूम नहीं था कि वह कहां जा रहा था। तैरते-तैरते उसने समुद्र के बीच में एक चट्टान देखी, जो सफेद संगमरमर की बनी हुई मालूम दे रही थी। उस चट्टान पर एक बहुत सुंदर भेड़ खड़ी हुई थी, जो मिमियाकर पिंकू को वहां पहुंचने का इशारा कर रही थी।

लेकिन एक विचित्र बात यह थी कि उस भेड़ के बाल बजाए काले या सफेद होने के नीले थे और ऐसे नीले कि वे किसी बच्चे के सुंदर नीले बालों से मिलते थे।

उसको देखकर पिंकू का दिल बांसों उछलने लगा। वह दुगुनी शक्ति से उस सफेद चट्टान की तरफ तैरने लगा। उसने आधा रास्ता ही तय किया था, तभी उसको पानी के ऊपर उठता हुआ तथा अपनी तरफ आता हुआ एक समुद्री दैत्य का भयानक सिर दिखाई पड़ा। उसका मुंह गुफा की तरह था और उसके दांत भी इतने बड़े-बड़े थे कि उनको देखने से डर लगता है।

और जानते हो समुद्री दैत्य कौन था?

यह वही व्हेल मछली थी, जिसके बारे में पहले भी दो-तीन बार इस कहानी में जिक्र आ चुका है। सोच सकते हो कि उसे देखकर पिंकू को कितना डर लगा होगा? उसने उससे बचने की कोशिश की, लेकिन वह भयानक सिर उसकी तरफ तीर की तरह आ रहा था।

...पिंकू जल्दी करो... उस भेड़ ने मिमियाते हुए आवाज दी और पिंकू ने जितनी जल्दी हो सका, टापू तक पहुंचने की कोशिश की।

...पिंकू जल्दी करो, दैत्य तुम्हारे बिल्कुल पास आ गया है।

पिंकू पहले से भी अधिक तेजी से तैरने लगा और तोप के गोले की तरह उड़ने लगा। वह चट्टान के पास पहुंचा ही था और उसे भेड़ ने उसकी सहायता के लिए अपने अगले पैर आगे किए ही थे, तभी वह दैत्य वहां पहुंच गया और उसने एक मुर्गी के अंडे की तरह उसको निगल लिया। उसने उसको इतनी तीव्रता से निगला कि उसके पेट में पहुंचकर पंद्रह मिनट तक तो पिंकू को होश ही नहीं आया।

खैर, जब उसको होश आया तो उसने चारों तरफ देखा, लेकिन उसको मालूम नहीं हो सका कि वह किस दुनिया में है। उसके चारों तरफ ऐसा घना अंधकार था कि मानो पिंकू सिर के बल स्याही के किसी टब में गिर गया हो। उसने कुछ सुनने की कोशिश की लेकिन उसे कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ी। सिर्फ हवा के झोंके जरूर महसूस होते थे। पहले तो वह यह अंदाज नहीं लगा सका कि हवा किधर से आ रही थी लेकिन बाद में उसको मालूम हो गया कि वह उसके फेफड़ों से आ रही थी। उस दैत्य को सांस की बीमारी थी। इसलिए जब वह सांस लेता था, तो ऐसा मालूम होता था मानो उत्तरी हवा चल रही हो।

पहले तो पिंकू ने थोड़ा साहस रखा लेकिन जब वह अच्छी तरह जान गया कि वह उस दैत्य के शरीर में कैद हो गया है, तो वह चीखने और रोने लगा।

...मदद करो, मदद करो! आह! क्या मैं इतना अभागा हूं कि मुझे कोई नहीं बचा सकता?

...तुम्हारे जैसे अभागे को कौन बचा सकता है? ... अंधेरे में से एक आवाज आई।

...कौन बोल रहा है? ... पिंकू ने डरते हुए पूछा।

...मैं तो एक छोटी मछली हूं। जिस समय तुमको निगला गया था, उसी समय मैं भी निगली गई थी। अच्छा तुम कौन-सी मछली हो?

...मैं मछली नहीं हूं। मैं तो एक कठपुतला हूं।

... जब तुम मछली नहीं हो,

तो तुमने अपने को दैत्य द्वारा निगल क्यों जाने दिया?

...मैंने खुद अपने को नहीं निगलवाया। दैत्य ने ही मुझे निगल लिया। लेकिन अब अंधेरे में हम क्या करेंगे?

...उस वक्त का इंतजार, जब यह दैत्य हम दोनों को पचा लेगा।

...लेकिन मैं पचना नहीं चाहता हूं। पिंकू बोला। उसको फिर रुलाई आ रही थी।

...भाई, पचना तो मैं भी नहीं चाहती हूं... मछली ने कहा-लेकिन मैंने तो अपने मन में इस तरह संतोष कर रखा है कि एक मछली के लिए तेल की कढ़ाई में मरने की अपेक्षा पानी में मरना अच्छा है।

...यह सब बेकार है।

...यह मेरा विचार है और राजनीतिज्ञ मछलियों का कहना है कि विचारों की कद्र की जानी चाहिए।

...खैर कुछ भी हो। मैं तो यहां से बचकर निकलना चाहता हूं।

...अगर तुम निकल सको, तो निकल जाओ।

...क्या व्हेल मछली जिसने हमें निगला है बहुत बड़ी है?

...बड़ी! अरे भाई वह इतनी बड़ी है कि उसकी पूंछ का हिसाब न लगाओ तो भी दो मील लंबी है।

जब वे इस तरह की बातें कर रहे थे तो पिंकू को दूर एक रोशनी-सी दिखाई पड़ी।

...वहां वह रोशनी-सी क्या दिखाई पड़ रही है-उसने पूछा।

...शायद यह भी कोई हमारा साथी होगा जो अपने पचाए जाने का इंतजार कर रहा है।

...मैं जाकर पता लगाता हूं। क्या तुम्हारे ख्याल से कोई बूढ़ी मछली नहीं हो सकती, जो हमें बचने का कोई उपाय बता सके?

...हो सकती है।

...अच्छा मछली, नमस्ते।

...नमस्ते, कठपुतले! तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो।

...हम फिर कहां मिलेंगे?

...क्या कहा जा सकता है?

...उसके बारे में तो न सोचना ही ठीक है।

पिंकू उस चुन्नी नामक मछली से विदा लेकर अंधेरे में अपना रास्ता टटोलता हुआ व्हेल मछली के विशालकाय शरीर में आगे बढ़ने लगा। वह उस दिशा में जा रहा था, जिधर से रोशनी आ रही थी।

जितना ज्यादा वह आगे बढ़ता गया, रोशनी उतनी ही ज्यादा तेज प्रतीत होने लगी, वह चलता गया, चलता गया और आखिर में मंजिल पर पहुंच ही गया। जानते हो उसने वहां क्या देखा?

उसने देखा कि वहां एक छोटी-सी मेज़ पड़ी थी। उस मेज़ पर हरे रंग के शीशे की बोतल के ऊपर चिपकी हुई एक मोमबत्ती जल रही थी। मेज़ के पास एक बूढ़ा आदमी कुर्सी पर बैठा हुआ ज़िंदी मछलियां खा रहा था।

यह दृश्य देखकर पिंकू को एकदम इतनी खुशी हुई कि वह

कुछ क्षण तक तो बोल भी नहीं सका। वह हंसना चाहता था, रोना चाहता था और न जाने क्या-क्या कहना चाहता था, लेकिन वह कुछ टूटे-फूटे शब्दों में ही कुछ कह सका। आखिर, वह आगे बढ़ा और उसने अपनी दोनों बांहें उसे बूढ़े आदमी के गले में डाल दीं। इसके बाद वह कहने लगा... ओह पिताजी, आखिर मैंने आपको पा ही लिया। अब मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा।

...तो फिर मैं ठीक ही पहचान रहा हूं? बूढ़े आदमी ने अपनी आंखों को रगड़ते हुए कहा- तो सचमुच मेरे पिंकू हो?

...हां पिताजी, मैं आपका पिंकू ही हूं, सचमुच पिंकू। आप तो मुझे बिल्कुल भूल ही गए हैं, क्यों, है न? ओह! पिताजी, आप कितने अच्छे हैं... और इसके विपरीत मैं... लेकिन आपको मालूम नहीं मुझ पर कितनी मुसीबतें आई थीं...।

इसके बाद पिंकू ने उन सब घटनाओं का जिक्र किया, जो गप्पू से बिछुड़ने के बाद उसके साथ घटी थीं। पिंकू ने कहा कि एक बार तो उसने गप्पू को नाव में बैठे हुए देखकर इशारा भी किया था।

यह सुनकर गप्पू बोला- मैं भी तुमको पहचान गया था और मैंने वापस लौटने की कोशिश भी की थी। लेकिन समुद्र में तूफान आ रहा था और मेरी नाव उछल गई तभी इस व्हेल मछली ने जो नजदीक ही थी, मुझे निगल लिया।

...और आप यहां कितने समय से पड़े हैं? -पिंकू ने पूछा।

...दो साल से और ये साल मुझे दो सौ साल जैसे लगे हैं।

...आपने इन चीजों का तथा खाने-पीने का इंतजाम कैसे किया?

...ठहरो, मैं तुम्हें बताता हूं। जिस तूफान से मेरी नाव उलट गई थी, उसी तूफान से एक व्यापारी का जहाज भी डूब गया था। आदमी तो सभी बच गए, लेकिन जहाज पेंदे में चला गया और यह व्हेल मछली इतनी भूखी थी कि उसने जहाज को ही निगल लिया।

...कैसे?

...कैसे? अरे इसने सिर्फ एक ग्रास ही लिया। उसने सिर्फ वह मस्तूल जो उसके दांतों में हड्डी की तरह अटक गया था, थूक दिया। भाग्य की बात कि जहाज में खाने-पीने की चीजें, मोमबत्तियां, सब-कुछ था। ❑

-क्रमशः

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(मई, 2019)

बाल भारती का लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' पाठकों की मांग पर पुनः आरंभ किया गया है। इस कूपन के साथ 31 मार्च, 2019 तक *'गर्मी की छुट्टियां'* पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को *बाल भारती* में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को एक वर्ष तक हमारी ओर से *बाल भारती* की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी।

नाम .....

आयु .....

पता .....

.....

.....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

श्रद्धांजलि

फांसी के तख्ते पर

–वीरेन्द्र सिन्धु

भगत सिंह का ध्यान 23 मार्च, 1931 की सुबह ट्रिब्यून अख़बार पढ़ते समय पुस्तक परिचय स्तंभ पर जा टिका जिसमें रूस में समाजवाद के संस्थापक 'लेनिन' के जीवनचरित्र की आलोचना छपी थी। भगत सिंह इस जीवन चरित्र को पढ़ने के लिए बेचैन हो उठे। उन्होंने जेल के वार्डन द्वारा अपने मित्र, प्राणनाथ मेहता वकील के पास गुप्त पत्र भेजा, जिसमें लिखा था, ''अंतिम वसीयत के बहाने तुरंत मुझ से मिलो। पर लेनिन का जीवन चरित्र लाना न भूलना।''

इधर यह सब हो रहा था, उधर हाईकोर्ट ने सरदार किशन सिंह का प्रार्थनापत्र अस्वीकार कर दिया और सरकारी वकील वार्डन नोड ने हाईकोर्ट से फांसी का हुक्म भी हाथों-हाथ ले लिया। इस बात को पूरी तरह गुप्त रखा गया था, फिर भी यह ख़बर चारों ओर फैल गई और यह स्पष्ट दिखने लगा था कि कल सुबह फांसी होगी।

उसी दिन अंतिम मुलाक़ात के लिए भगत सिंह के परिवार के लोग आए, परंतु जेल अधिकारियों ने यह कहकर कि केवल रक्त-संबंधी (यानी माता-पिता, भाई-बहन) ही मिल सकते हैं, मुलाक़ात करने में बाधा उपस्थित की। भगत सिंह के माता-पिता यह कैसे स्वीकार कर सकते थे कि दादा-दादी और चाचियां अंतिम बार भगत सिंह को न देखें? जेल अधिकारी सबको मिलने देने के लिए तैयार नहीं हुए, तो भगत सिंह के माता-पिता बिना अंतिम मुलाक़ात किए ही लौट गए।

जब बाहर यह सब हो रहा था तभी प्राणनाथ मेहता भगत सिंह की कालकोठरी में पहुंचे। उस दिन की भेंट के बारे में प्राणनाथ मेहता ने स्वयं लिखा है–''उस दिन मैं लगभग एक घंटा भगत सिंह की कोठरी में उसके पास रहा। मैं बहुत बार उसी स्थान पर उनसे मिल चुका था। उनकी भूख हड़तालों और

पुलिस के साथ तथा अदालत के भीतर उनके साहसिक संघर्ष को अपनी आंखों से देख चुका था, परंतु मैंने यह कभी अनुभव नहीं किया था कि वे इतने बहादुर, साहसी और महान हैं। मैं जानता था और वे भी जानते थे कि मृत्यु का क्षण निकट आ रहा है। घड़ी की सुइयां फांसी के समय की ओर तेज़ी से बढ़ रही हैं पर इसके बावजूद मैंने उन्हें प्रसन्न मुद्रा में पाया। उनके चेहरे पर रौनक ज्यों-की-त्यों थी और जब मैं उनके पास पहुंचा, वे पिंजरे में बंद शेर की तरह टहल रहे थे।

''मेरे कोठरी में पैर रखते ही, उन्होंने अपने खास लहजे में पूछा, ''आप यह पुस्तक ले आए?'' मैंने क्रांतिकारी लेनिन उन्हें थमा दी। उसे देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए।

मैंने कहा ''देश के लिए अपना संदेश दीजिए।'' उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, ''साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, इंक़लाब-ज़िंदाबाद।''

मैंने उनकी मनोभावनाओं को जानने के लिए पूछा, ''आज आप कैसा महसूस कर रहे हैं?'' उनका संक्षिप्त उत्तर था, ''मैं बिल्कुल प्रसन्न हूं।''

मैंने पूछा, ''आपकी अंतिम इच्छा क्या है?'' उनका उत्तर था, ''बस यही कि फिर जन्म लूं और मातृभूमि की और अधिक सेवा करूं। उन्होंने मुक़दमे में दिलचस्पी लेने वाले नेताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और अपने मित्रों, खासकर फरार साथियों के लिए शुभकामनाएं दीं। अजीब बात यह थी कि मृत्यु के वातावरण से मेरी आवाज में कंपकंपी थी, पर भगत सिंह तन-मन से पूर्ण स्वस्थ थे। वे इतने निश्चिंत थे कि मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता और निर्लिप्तता को देख ऐसा लगा कि वह मनुष्य नहीं कोई देवता है।''

लाहौर सेंट्रल जेल की चौदह नंबर बैरक में कुछ और क्रांतिकारी साथी थे। उसी दिन दोपहर को उन्होंने भगत सिंह के पास एक लिखित संदेश भेजा, ''सरदार, आप एक सच्चे क्रांतिकारी की हैसियत से यह बताएं कि क्या आप चाहते हैं कि आपको बचा लिया जाए? इस आखिरी वक्त में भी शायद कुछ हो सकता है।''

जेल के बाहर की भीड़ उमड़ पड़ी थी, उत्तेजित जनसमूह इस तैयारी में था कि कल सुबह होने के पूर्व ही जेल की दीवार तोड़कर भगत सिंह और साथियों को जेल से निकाल लें। भगत सिंह ने उस पर्चे को पढ़ा, एक मुस्कुराहट उनके चेहरे पर बिखर गई और फिर गंभीर हो उन्होंने निम्नलिखित पर्चा चौदह नंबर बैरक के कैदियों को लिख भेजा:

ज़िंदा रहने की ख़्वाइश कुदरती तौर पर मुझ में भी होनी चाहिए। मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मेरा ज़िंदा रहना एक शर्त पर निर्भर करता है।

मेरा नाम भारतीय क्रांतिकारी पार्टी का मध्यबिंदु बन चुका है और भारतीय क्रांतिकारी दल के आदर्शों और बलिदानों ने मुझे बहुत ऊंचा उठा दिया है, इतना ऊंचा कि जिंदा रहने की सूरत में इससे ऊंचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। आज मेरी कमजोरियां लोगों के सामने नहीं हैं। अगर मैं फांसी से बच गया तो वह जाहिर हो जाएंगी और क्रांति का निशान मद्धम पड़ जाएगा या शायद मिट ही जाए। लेकिन मेरे दिलेराना ढंग से हंसते-हंसते फांसी पाने की सूरत में भारतीय माताएं अपने बच्चों के भगत सिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए बलिदान देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद की संपूर्ण शैतानी राक्षसी शक्तियों के वश की बात न रहेगी।

हां, एक ख़्याल आज भी चुटकी लेता है। देश और इंसानियत के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थी, उनका हज़ारवां हिस्सा भी पूरा न कर पाया। अगर ज़िंदा रह सकता तो शायद इनको पूरा करने का मौक़ा मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता।

इसके सिवा कोई लालच मेरे दिल में फांसी से बचे

रहने का कभी नहीं आया। मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा? मुझे आजकल अपने आप पर बहुत नाज़ है। मुझमें, अब कोई ख्वाहिश बाकी नहीं है। अब तो बड़ी बेताबी से आखिरी इम्तहां का इंतज़ार है। आरज़ू है कि यह और करीब हो जाए।

इस पत्र में भगत सिंह अपने जीवन की पूरी ऊंचाई के साथ हमारे सामने आ गए हैं। उन्होंने जो कुछ किया, वह अनुपम है, पर वे उतने ही संतुष्ट नहीं हैं। वे मानवता के लिए अभी और बहुत कुछ करना चाहते थे। जिंदा रहने की ख़्वाहिश भी सिर्फ इसीलिए थी, परंतु जो कुछ होने जा रहा था उसका भी वे बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

मृत्यु को इतना निकट देखकर भी वे पूरी तरह शांत एवं प्रसन्न थे। कोई भय, कोई घबराहट उनके चेहरे पर नहीं थी। जो व्यक्ति साथियों का संदेश लेकर आया था, वही भगत सिंह का संदेश लेकर चलने लगा तो भगत सिंह ने कहा, ''उनसे कहना, यारों बातें तो बहुत हो चुकीं अब रसगुल्ले तो खिला दो।'' थोड़ी ही देर में रसगुल्ले आ गए। भगत सिंह ने बड़ी प्रसन्नता के साथ रसगुल्ले खाए। यह उनके जीवन का अंतिम भोजन था।

सभी क़ैदी इस समय अपनी कोठरियों से बाहर थे। असिस्टेंट जेलर ने सब से अपनी-अपनी जगह बंद हो जाने को कहा। बंद होने का समय तो शाम का होता है, अभी तो दोपहरी भी नहीं ढली थी। सभी के मन में प्रश्न उठा कि ज़रूर कोई खास बात है। सब ने शंका भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा तो फिर चुपचाप अपनी-अपनी कोठरियों में चले गए। हां, खास बात तो आज ही की थी, इतिहास में जो कभी नहीं हुआ था, वह होने जा रहा था। फांसी सदैव प्रात:काल दी जाती है पर यहां तो दोपहर बाद ही तैयारियां आरंभ हो गई थीं। सभी नियमों-कानूनों का उल्लंघन कर ब्रिटिश सरकार ने शाम को ही फांसी देने का निर्णय कर लिया था।

लाहौर सेंट्रल जेल के चीफ वार्डन चतर सिंह को दोपहर बाद तीन बजे के लगभग यह सूचना दी गई कि आज शाम को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दी जाएगी, इसीलिए वह पूरी व्यवस्था कर लें। चतर सिंह मधुर स्वभाव वाला ईश्वरभक्त मनुष्य था। सुबह-शाम पाठ किया करता था। उसे जब मालूम हुआ कि भगत सिंह की जिंदगी के कुछ ही घंटे बाकी हैं तो वह उनके पास गया और कहने लगा, ''बेटा, अब तो आखिरी वक्त आ पहुंचा है। मैं तुम्हारे बाप के बराबर हूं। मेरी एक बात मान लो।''

भगत सिंह ने हंसकर कहा, ''कहिए क्या हुक्म है?'' चतर सिंह ने जवाब दिया, ''मेरी सिर्फ एक दर्खास्त है कि अब आखिरी वक्त में तो 'वाहे गुरु' का नाम ले लो और गुरुवाणी का पाठ कर लो। यह लो गुटका तुम्हारे लिए लाया हूं।''

भगत सिंह जोर से हंस पड़े और बोले, ''आपकी इच्छा पूरी करने में मुझे आपत्ति नहीं हो सकती थी, अगर कुछ समय पहले आप कहते। अब जबकि आखिरी वक्त आ गया है मैं परमात्मा को याद करूं तो वे कहेंगे कि यह बुज़दिल है, ताउम्र तो इसने मुझे याद किया नहीं, अब मौत सामने नज़र आने लगी तो मुझे याद करने लगा है। इसलिए बेहतर यही होगा कि मैंने जिस तरह पहले ज़िंदगी गुज़ारी है, उसी तरह मुझे दुनिया से जाने दीजिए। मुझ पर इल्जाम तो कई लोग लगाएंगे कि मैं नास्तिक था और मैंने परमात्मा में विश्वास नहीं किया लेकिन यह तो कोई न कहेगा कि भगत सिंह बुज़दिल और बेईमान भी था और आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर उसके पांव लड़खड़ाने लगे।''

नहीं, उनके पांव नहीं लड़खड़ाए। वे तो इस समय अपने सबसे बड़े दोस्त से मुलाकात कर रहे थे। प्राणनाथ मेहता उन्हें लेनिन का जो जीवन चरित्र दे गए थे, वे उसे पढ़ रहे थे। अभी उन्होंने कुछ

पृष्ठ ही पढ़े थे कि उनकी कालकोठरी का ताला खुला और जेल अधिकारी ने कहा, ''सरदारजी, फांसी लगाने का हुक्म आ गया है, आप तैयार हो जाएं।''

भगत सिंह के दाहिने हाथ में पुस्तक थी। उन्होंने पुस्तक पर से बिना आंख उठाए बायां हाथ उन लोगों की ओर उठा दिया और कहा, ''ठहरो, एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।'' भगत सिंह की आवाज में पूर्ण तेज था और पूरी प्रसन्नता थी। उनके इस प्रकार मुक्त स्वर को सुनकर जेल अधिकारी भौचक्के से रह गए। कुछ पैराग्राफ पढ़कर भगत सिंह ने पुस्तक छत की ओर उछाल दी और उचक कर खड़े हो गए। सुखदेव और राजगुरु भी अपनी कोठरियों से बाहर आ गए थे। तीनों ने प्यार से एक-दूसरे को गले लगाया। भगत सिंह ने कहा, ''हमारे हाथों में हथकड़ियां न लगाई जाएं और हमारे चेहरे कनटोप से न ढंके जाए।'' उनकी यह बात मान ली गई।

भगत सिंह बीच में थे, सुखदेव-राजगुरु दाएं-बाएं। क्षण भर के लिए तीनों रुके, फिर चले और चलने के साथ ही भगत सिंह ने गाना आरंभ किया:

दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उलफत,
मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वतन आएगी।

और फिर तीनों मिलकर इसे ही गाने लगे।

वार्डन ने आगे बढ़कर फांसी घर का काला दरवाज़ा खोला। भीतर लाहौर का अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर नियमानुसार खड़ा था। वह इन तीनों को खुला देखकर जरा परेशान हुआ, पर जेलर ने उसे आश्वस्त कर दिया। तभी भगत सिंह उसकी ओर मुड़े और बोले, ''मजिस्ट्रेट महोदय, आप भाग्यशाली हैं कि आज आप अपनी आंखों से यह देखने का अवसर पा रहे हैं कि भारत के क्रांतिकारी किस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक अपने सर्वोच्च आदर्श के लिए मृत्यु का आलिंगन कर सकते हैं।

भगत सिंह के स्वर में व्याप्त सच्चाई से प्रभावित हो डिप्टी कमिश्नर जैसे पानी-पानी हो गया। भगत सिंह और उसके साथी फांसी के मंच की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आ गए थे। उनके पैरों में न कंपकंपी थी, न लड़खड़ाहट और न चेहरों पर कोई घबराहट। तीन फंदे लटक रहे थे। तीनों वीर उसी क्रम से उनके नीचे आ खड़े हुए, बीच में भगत सिंह, दाएं राजगुरु और बाएं सुखदेव। तीनों ने एक साथ सिंह गर्जना की ''इंक़लाब ज़िंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद।''

तीनों ने अपना-अपना फंदा पकड़ा और उसे चूमकर अपने ही हाथ से गले में डाल दिया। भगत सिंह ने पास खड़े जल्लाद से कहा, ''कृपाकर अब इन फंदों को आप ठीक कर लें।'' जल्लाद ने कब ऐसे लोग देखे थे? कब ऐसे स्वर सुने थे? डबडबाती आंखों और कांपते हाथों से उसने फंदे ठीक किए, नीचे आकर चरखी तख्ता गिरा और तीनों वीर भारत माता को अर्पित हो गए। समय था संध्या सात बजकर तैंतीस मिनट। ❑

–प्रकाशन विभाग से प्रकाशित पुस्तक 'अमर शहीद भगत सिंह' से साभार

परमाणु बिजली घर

–दिलीप भाटिया

कैलाश ने मां की स्मृति में बालिका स्कूल में स्टेशनरी वितरित कर दी। संचालक मैडम ने जब छात्राओं को कैलाश का परिचय 'परमाणु वैज्ञानिक' दिया तब कई छात्राएं जिज्ञासापूर्वक अपनी शंकाओं का समाधान पूछने लगीं।

मीनाक्षी: सर, आजकल प्रतिदिन चार छह घंटे बिजली नहीं रहती, इसका क्या कारण है?

कैलाश: मीनाक्षी, हमारे देश में बिजली की मांग एवं उत्पादन में गहरी खाई है। उत्पादन कम होने से *पावर कट* करना होता है।

सरोज: सर, बिजली का उत्पादन कम होने के क्या कारण है?

कैलाश: कोयले के भंडार सीमित हैं, पर्याप्त वर्षा न होने से पन बिजली घर भी पूर्ण क्षमता उत्पादन नहीं कर पाते। सौर ऊर्जा मंहगी है, गैस से चलने वाले बिजली घरों को भी पूरा ईंधन नहीं मिल पाता, परमाणु बिजली का योगदान भी तीन फीसदी ही है।

शिप्रा: सर, परमाणु बिजली घर हर प्रदेश में क्यों नहीं लगाए जा रहे?

कैलाश: राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक में 22 परमाणु रिएक्टर 6780 मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता रखते हैं। भारत सरकार ने 10 नए रिएक्टर लगाने की स्वीकृति दे दी है। गोरखपुर (हरियाणा) एवं चुटका (मध्य प्रदेश) में शीघ्र ही निर्माण कार्य प्रारंभ हो जाएगा। इन राज्यों में भी यूरेनियम से बिजली बनने लगेगी।

रवीना: सर, रेडियेशन से हमें हानि भी होती होगी?

कैलाश: रेडियेशन से सुरक्षा हेतु डिजाइन प्रचालन में पूरी सावधानी रखी जाती है। हर कर्मचारी की रेडियेशन मात्रा का रिकॉर्ड रखा जाता है एवं सुरक्षा की दृष्टि से अनुमत: सीमा का लक्ष्मण रेखा के समान पालन होता है।

प्राचार्या: सर, इन्हें रेडियेशन के बारे में कुछ विस्तार से बताइए, इन छात्राओं की विज्ञान में विशेष रुचि है।

कैलाश: रेडियेशन की यूनिट मिली रेम है। बिजली घर में काम करने वाले कर्मचारी को प्रति वर्ष 3000 मिलीरेम रेडियेशन दिया जा सकता है। दैनिक वेतन

भोगी हेतु यह सीमा 1500 मिलीरेम वार्षिक रखी गई है।

सीमा: सर, इतने रेडियेशन से स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव तो नहीं पड़ता?

कैलाश: सीमा, बिल्कुल नहीं, देखो मैंने स्वयं 38 वर्ष परमाणु बिजली घर में काम करते हुए हजारों मिलीरेम विकिरण लिया है, पर आज 70 वर्ष की आयु में भी मैं पूर्ण स्वस्थ हूं। नियंत्रित अनुमानित सीमा में रेडियेशन से कोई हानि नहीं होती।

मोनिका: सर, रेडियेशन क्षेत्र में काम करते समय आप क्या सावधानी रखते थे?

कैलाश: पूरी तैयारी से काम करने जाते थे, प्लास्टिक सूट बायवर सूट में जाते थे, स्वास्थ्य भौतिकी विभाग उस क्षेत्र में रेडियेशन सर्वे कर हमें जितने समय की अनुमति देता था, उतने ही समय वहां रहते थे। फ्रेश एयर लाइन सप्लाई से शुद्ध वायु से ही सांस लेते थे।

साधना: सर, फिर पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला की क्या भूमिका है?

कैलाश: प्रत्येक परमाणु बिजली घर स्थल पर यह प्रयोगशाला वायु, जल, भूमि, खाद्य एवं कर्मचारियों का निरीक्षण करती है एवं कर्मचारियों, आस-पास रहने वाली जनता एवं वातावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करती है।

उपमा मैडम: सर, फिर इतने विरोध क्यों हो रहे हैं?

कैलाश: अधूरी एवं गलत जानकारी के कारण, कुछ असामाजिक संस्थाएं कुप्रचार कर रही हैं। विषय के विशेषज्ञ एवं काम करने वाले कर्मचारी के अनुभव स्वत: ही सही संतुलित जानकारी दे सकते हैं। भ्रम, संदेह, शंका को दूर कर सही व्यक्ति से जानकारी लेने से सभी प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं।

स्तुति: सर, भविष्य में क्या परमाणु बिजलीघर पावर कट समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे?

कैलाश: निश्चय ही, शनै: शनै: जब परमाणु बिजली घरों का योगदान वर्तमान 3 प्रतिशत से बढ़कर 5-10-20 प्रतिशत तक पहुंचेगा, तो कई अंधेरे घरों को रोशनी मिलेगी। राजस्थान एवं गुजरात में 4 रिएक्टर का निर्माण कार्य प्रगति पर है एवं इनके पूरे होने पर 2800 मेगावाट अतिरिक्त बिजली मिलने लगेगी।

(सभी बच्चे करतल ध्वनि करते हैं)

प्राचार्या: स्कूल प्रबंधन कैलाश जी का कृतज्ञ है कि उन्होंने परमाणु ऊर्जा से संबंधित छात्राओं की जिज्ञासाओं का सरल शैली में समाधान किया, धन्यवाद, सर। हम भविष्य में भी आपकी सेवाएं लेते रहेंगे।

कैलाश एवं सभी शिक्षिकाएं जलपान हेतु प्राचार्या कक्ष में चले गए। ❑

रावतभाटा-323307

'गांधीजी और स्वच्छता' विषय पर पेंटिंग प्रतियोगिता और कार्यशाला का आयोजन

प्रकाशन विभाग की तरफ से 24 जनवरी, 2019 को 'गांधीजी और स्वच्छता' विषय पर बाल भारती पब्लिक स्कूल, नोएडा में बच्चों के लिए एक पेंटिंग प्रतियोगिता और कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 700 बच्चों ने भाग लिया। इस आयोजन का उद्देश्य बच्चों के बीच स्वच्छता पर जागरूकता फैलाना और स्वच्छता पर गांधीजी के विचारों को अभिव्यक्त करना था।

विजेता बच्चों को प्रकाशन विभाग की तरफ से पुरस्कारस्वरूप *बाल भारती* के जनवरी अंक सहित पुस्तकें प्रदान की गईं।

कक्षा तीन से लेकर आठवीं तक के बच्चों ने बड़ी खूबसूरती से अपने-अपने विचार रंगों के माध्यम से कागज पर उतारे। बच्चों के दो समूह बनाए गए जिनमें कक्षा पांच तक जूनियर और कक्षा आठ तक के बच्चों को सीनियर समूह में रखा गया। जूनियर वर्ग में तीन बच्चों की पेंटिंग को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रखा गया। सीनियर वर्ग से भी तीन पेंटिंग क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान के लिए चयनित की गईं। सीनियर वर्ग के तीन विजेता बच्चे रहे। अर्चना मुनि, कक्षा- सात 'ए' (प्रथम),

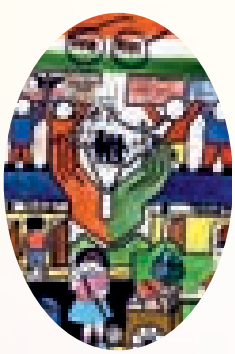

चारवी अग्रवाल कक्षा- सात 'सी' (द्वितीय) और परिधि सक्सेना कक्षा- सात 'डी' (तृतीय)। इसी प्रकार, जूनियर वर्ग के तीन विजेता बच्चे रहे। अर्श शर्मा, कक्षा-पांच 'बी' (प्रथम), अचिंत्य गोयल, कक्षा-चार 'डी' (द्वितीय) और एस. शिवम आनंद कक्षा-तीन 'बी'। इसके अलावा, प्रत्येक वर्ग में दस-दस बच्चों को सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए। इनके नाम हैं : देवक बिष्ट, राजराजेश्वरी, अविका शर्मा, नूपुर गोयल, अक्षिता खन्ना, साक्षी शर्मा, प्रिशा सैनी, वाणी गुप्ता, अक्षज सिंह और वेदांशी गौतमय सभी सीनियर वर्ग)। अद्रिजा पॉल, ख्याति जनार्दन, तंशिका पचौरी, सनिका भगत, तनय कार, लक्ष्य कुंवर, अक्षिता कीर्ति, अरुल सिंह सैनी, कृष्णकांत पांडा और अनन्या कांबोजय सभी जूनियर वर्ग)।

स्कूल की प्रधानाचार्य आशा प्रभाकर ने बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता और गांधीजी के स्वच्छता पर विचारों को सामने रखा। सीनियर विंग की प्रभारी सुश्री अमिता गंजू और जूनियर विंग की प्रभारी सुश्री विनया पुजारी, कला अध्यापक युवराज और नीलाद्रि ने कार्यशाला में बच्चों की भागीदारी बढ़ाने में सहयोग किया। इस कार्यशाला के समन्वय का कार्य सुश्री इलाश्री जायसवाल ने किया। ❑

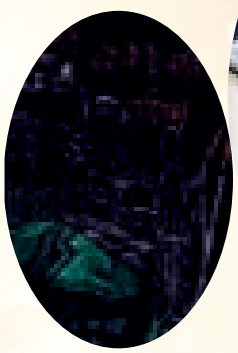

वसुधैव कुटुम्बकम्

–अमिताभ शंकर रायचौधरी

जल्दी-जल्दी जब घर से होता है जाना झंझट को मिल जाता कोई नया बहाना!

बस इसी को कहते हैं सूखे फर्श पर पांव फिसलना! अभी-अभी अचानक घर में समधी और समधिनजी पधारे हैं, ''भाई, अचानक यहां आना हुआ तो आप लोगों से भेंट करने भी आ धमके।'' बस, एक धमाका हुआ। श्रीमतीजी ने आंखों ही आंखों में घनश्यामजी को कमरे से बाहर बुला लिया, ''जाइए। फट से मिठाई और समोसे लेते आइए। मैं तब तक दस मिनट बाद चाय बना रही हूं।''

यानी, घनश्यामजी के पास पंद्रह से बीस मिनट का ही वक्त है। इसी में जाइए और रस माधुरी स्वीट से सब कुछ लेते आइए। अब मेहमान को ठंडी चाय के साथ गरम समोसे तो नहीं न देने हैं। तो चल पड़ा बलि का बकरा खुशी-खुशी।

अपना स्कूटी निकालने के लिए मुख्यद्वार खोलते ही–यह क्या? सामने विंध्याचल के समान बाधा। किसी ने अपनी कार इस तरह गेट के सामने रख दी है कि उसके बगल से कोई गुजर भी नहीं सकता। एक तरफ बिजली का खंभा और सामने वह अड़ंगा।

पैर पटकते हुए कार के पास जाकर घनश्याम उसकी खिड़की के शीशे पर कठफोड़वा की भांति ठक्-ठक् करने लगे। पहले तो किसी ने घास नहीं डाली। वह चिल्लाने लगे, 'यह किसकी कार है?'

दो तीन प्रयासों के बाद कहीं से एक आवाज आई, ''क्या हुआ साहब?''

फिर दौड़ते हुए रथ सारथी का रंगमंच में प्रवेश, ''माफ कीजिए साहब, मालकिन बाजार गईं हैं, तो मुझे यहीं रुकने के लिए कह गईं है।''

''बस यह *सॉरी* का लफ़्ज़ खूब चला है। किसी का कत्ल क्यों न कर दो, फिर कह दो-सॉरी, भाई साहब! बस मामला खत्म। अंग्रेज चले गए। मगर यह सॉरी छोड़ गए।''

बेचारा ड्राइवर गाड़ी के अंदर जाकर जल्दी से स्टार्ट करने लगा। मगर तब तक एक और 'भव बाधा'!

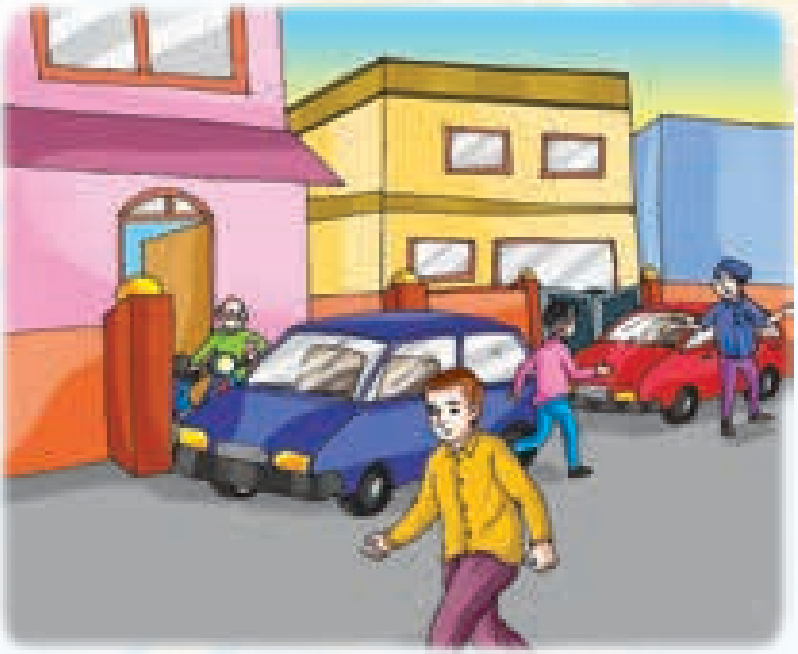

एक महोदय अपनी साइकिल के पीछे बहुत लंबे चौड़े दो-दो पैकिंग बॉक्स लादे वहीं कार के सामने खड़े-खड़े मोबाइल से सामान पाने वाले का पता पूछ रहे थे, 'अरे मैं तो जंगमबाड़ी सड़क पर खड़ा हूं। अब सिंगरौली के लिए यहां से किधर जाऊं?'

उधर से कोई दिशा-निर्देश आ रहा था।

इधर से कार का हॉर्न-पों-पों... अजी सामने से हटिए न-!

घनश्याम के मन में घनघोर झुंझलाहट-धत् तेरी के! वह आगे बढ़कर साइकिल वाले के सन्निकट हो गए, 'जरा बगल हट कर बात नहीं कर सकते? रास्ता रोक कर मोबाइल पर बतियाते जा रहे हैं?'

वह आदमी भी हम किसी से कम नहीं के अंदाज़ में कहने लगा, 'ज्यों मैं बात करने लगा ठीक उसी वक्त आपकी जल्दबाज़ी शुरू हो गई? पल भर ठहर नहीं सकते?'

''पल-पल तब से तो जल रहा हूं। अब घर से निकलने भी दीजिएगा? मेहमान के लिए सामान लाना है।''

''तो जाइए न। किसने मना किया है?''

''कैसे जाऊं? दिख नहीं रहा है-उधर वो कारवाले दरवाज़े के सामने, और आप कार के सामने। मैं उड़ कर निकलूं घर से?''

''किसने मना किया है हुज़ूर? पर हो तो उड़ कर ही जाइए।'' साइकिल वाले का जुमला।

आखिर साइकिल हटी। कार आगे खिसकी। घनश्यामजी खिसियाते हुए मकान से बाहर निकल आए। वाहन सहित। रस माधुरी से समोसे वगैरह लेने में बीस मिनट, बत्तीस सेकेंड लगे होंगे। वापस आ गए अपने ठिकाने पर। मगर यह क्या-फिर से वही कार! सामने वो दीवार!

फिर से हो हल्ला! ठक्-ठक्। ''कहां गए जी?''

इतने में एक सज्जन पान चबाते हुए एवं होठों से लाल-लाल मुस्कुराहट बिखेरते हुए आगे आए, ''क्या हुआ जनाब? लग रहा है बहुत जल्दी में हैं?''

''अरे मुझे अपने घर में जाने दीजिएगा?''

''ओह सॉरी! तो यह आपका मकान है?''

''अरे अब मकान में घुसने के लिए आपको मालिकाने का कागज दिखाना होगा?''

''अरे राम राम! यह क्या कह रहे हैं?''

''और अभी-अभी तो यह कार यहीं खड़ी थी। निकलते समय भी तमाशा हुआ था।''

''ओह हो, फिर से सॉरी! वो ड्राइवर तो मैडम का सामान लाने लक्ष्मीकुंड चला गया है। चाबी मुझे देता गया। तो मैं ने यहीं गाड़ी को पार्क कर दिया। अब मुझे क्या मालूम कि उसने भी यहीं झंडा गाड़ दिया था। फिर से सॉरी।''

बचपन एक मुहावरा तो घनश्यामजी ने सुन ही रक्खा था, ''आग बबूला होना।'' तो वह आज अचानक सोचने लगे- कितने *टेम्परेचर* में आदमी को आग बबूला कहा जाता है? इस समय उनके दिमाग का *टेम्परेचर* क्या था?

खैर, कार ने टा-टा कर दिया। घनश्याम अंदर दाखिल हो गए। पत्नी ने फट् से मिठाई एवं समोसे

ले लिए। चाय का पानी उबलने लगा। घनश्याम ठंडा हो गए। अतिथि नारायण खुश। फिर तय हुआ कि वे आज रात यहीं रुक जाएंगे। कल दोपहर बाद शाम की ट्रेन से गुडबाय करेंगे। तो सुबह-सुबह उनको दशाश्वमेध सट्टी की ओर जाना पड़ा। इस समय सौभाग्य से बिना विघ्न के ही वे रवाना हो गए।

दशाश्वमेघ में बाजार सजने लगा था। नाई और कई संगमरमर की मूर्तिवालों की दुकान। उन्होंने एक जगह स्कूटी का लंगर डाल दिया। उसे स्टैंड से टेक लगाकर हटने ही वाले थे कि दुकान के अंदर से आवाज आई, ''अरे रे! भाई साहब, गंगाजी का सारा किनारा पड़ा हुआ है और आपने हमारी दुकान के सामने ही अपना घुड़साल बना लिया?''

कहते हुए दुकानदार पान चबाते हुए बाहर निकल आया। होठों पर सूर्योदय की अरुणिमा। घनश्याम चौंके- ''यह जनाब तो कलवाले सज्जन ही न हैं?''

दुकानदार ने भी पहचान लिया था, ''ओ तो आप हैं, प्रभु? अब देखिए न भाई साहब- वसुधैव कुटुम्बकम् इसी को कहते हैं। कभी मैं आपके घर के सामने तो कभी आप मेरी दुकान के सामने। हा... हा... हा...!''

घनश्यामजी हड़बड़ी में अपनी स्कूटी हटाने लगे।

उस आदमी ने आकर उनके कंधे पर हाथ रखा, ''अरे अब तो इसे रहने दीजिए। नाराज़ क्यों होते हैं? देखिए आज दुनिया कितनी छोटी हो गई है। चलिए पहले एक-एक कप चाय हो जाए, फिर सब्जी लेकर घर जाइएगा। हा... हा... हा...।''

उसने घनश्याम का हाथ थाम लिया। फिर कनखी मारकर गुनगुनाने लगा, ''साथी हाथ बढ़ाना!'' ❑

सी, 26/35-40,
रामकटोरा, वाराणसी,
221001

सफाई अभियान

–ज्योति कुमारी

मास्टर जी ने क्लास बुलाई
मोनू की हुई खूब बड़ाई
सबने पूछा कि क्या किया भाई
कि सबकी नजरें तुम पर आई

मोनू बोला कुछ भी तो नहीं
नहीं, नहीं कोई बात कहीं
बस थोड़ी सी साफ-सफाई
इतने से ही तारीफ कमाई

बच्चे खा गए झटके चक्कर
साफ-सफाई से कैसे टक्कर
बोले बात समझ न आई
बताओ न क्या राज है भाई

बोला मोनू सुनो गौर से
सोचो खुद की, न जलो और से
अपनी जो तुम रखो सफाई
तेरी भी सब करें बड़ाई

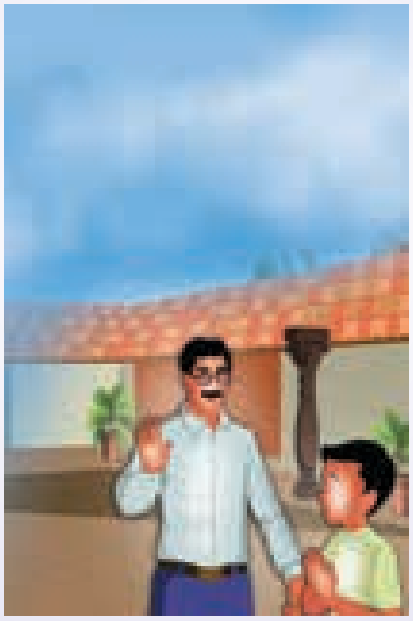

कपड़े साफ, जूते साफ,
साफ बस्ते, कक्षा भी साफ
निर्मल तन व मन निर्मल भाई
तभी मानो तुम पूरी सफाई

साफ रहोगे, स्वस्थ रहोगे
फिर न किसी से पस्त रहोगे
खेल में अव्वल, अच्छी पढ़ाई
कितने फायदे, दे एक सफाई

बच्चों ने पल भर साधा मौन
फिर लगी होड़ कि अव्वल कौन
बोले समवेत अब समझ आई
खाना, खेलना और पढ़ाई
सबसे आगे होगी सफाई

–संजय नगर, गाजियाबाद,
(उ.प्र.)

दोस्तों ने जान बचाई

–पवन कुमार वर्मा

गर्मी की घनी दोपहरी थी! घर के बाहर सन्नाटा छाया था! दिन के काम निपटा कर मम्मी सो रही थी! लेकिन छवि की आंखों से नींद गायब थी! उसे किसी का इंतज़ार था! मम्मी के डर से वह आंखें बंद किए उन्हीं के पास लेटी थी। मम्मी ने उसे धूप में निकलने को मना किया था।

अचानक उसे दरवाजे पर कुछ आवाज़ सुनाई दी! वह चुपके से उठकर बाहर आ गई। यहां तो सब के सब इकट्ठा थे!

छवि कुछ दिन पहले ही अपने नए घर में आई थी। उसके आस-पास अभी कोई नहीं रहता था! चारों ओर खेती होती थी! घर के ठीक बगल में नीम का घना पेड़ था! उस पर गिलहरियों और चिड़ियों ने अपने घर बना रखे थे! गर्मी की तेज़ धूप से बचने के लिए सड़कों पर घूमने वाले कुत्ते भी वहां आ जाते थे।

छवि को देखते ही चिड़ियों ने ज़ोर-ज़ोर से चीखना शुरू कर दिया। गिलहरियां उसकी दीवारों पर आ गई। कुत्ते भी गुर्राने लगे। छवि को उनकी बातें समझ में आ गई। उसने उन्हें चुप रहने का इशारा किया। वे शांत हो गए। वह धीरे से रसोई में गई। चुपके से कुछ बची हुई रोटियां और चावल के दाने लेकर बाहर आई।

बाहर आकर उसने चावल के दानों को ज़मीन पर बिखेर दिए। चिड़ियों की फौज दाना खाने में

जुट गई। गिलहरियां भी उनके साथ थीं। कुत्ते अब और ज़ोर-ज़ोर से गुर्राने लगे! उन्हें अभी तक रोटी नहीं मिली थी।

''आ रहीं हूं भाई। तुम्हारे लिए भी रोटियां लाई हूं।'' छवि उनसे बोली और उनको खाने के लिए रोटियां दे दी। वे बड़े चाव से रोटियां खाने लगे। छवि को उन्हें खिलाना और उनके साथ समय बिताना बहुत अच्छा लगता था।

इतने में मम्मी वहां आ गईं। आते ही उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से बोलना शुरू कर दिया, ''तुम फिर से बाहर आ गई। मैंने तुम्हें मना किया था कि दोपहर में घर से बाहर मत निकलना।''

''वो... मम्मी! अब आगे से नहीं...!'' उसने सफाई देने की कोशिश की! मम्मी उसके पास आ गई थीं। उनकी नज़र रोटी और चावल के दानों पर पड़ी।

''यह क्या? तुमने फिर से रोटियां निकाल लीं।'' मम्मी उसे फिर ज़ोर-ज़ोर से डांटने लगी।

उनकी तेज आवाज़ से गिलहरियां भाग कर पेड़ों पर चढ़ गईं। चिड़ियां भी उड़ गईं। लेकिन कुत्ते अब भी वहां डटे थे। जब मम्मी ने बाहर रखी लाठी उठाई तभी वे भागे, लेकिन साथ में रोटियां ले जाना नहीं भूले।

छवि के लिए यह रोज़ का काम था। कभी-कभी मम्मी जब उसे देख लेतीं, तब उसे ऐसे ही डांट पड़ती थी।

शाम को मम्मी पास के गौशाला में दूध लेने जाती थीं। आज जब वे लौटीं, तो घर के बाहर ही बैठ गईं। वहीं से उन्होंने छवि को आवाज़ दी। वह दौड़कर बाहर आई।

''क्या बात है मम्मी? आप यहां क्यों बैठी हैं? अंदर चलिए।'' उसने मम्मी से कहा।

''बेटा! मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही है। मेरे सिर में तेज दर्द हो रहा है, ज्वर है शायद।'' मम्मी उससे बोलीं।

''आप अंदर चलिए। मैं डॉक्टर अंकल के यहां से दवा लेकर आती हूं।'' छवि उन्हें अंदर ले आई। मम्मी को लिटा कर वह पास में डॉक्टर अंकल के यहां दवा लेने चली गई।

आज डॉक्टर अंकल के यहां बहुत भीड़ थी। किसी तरह उसने मम्मी के लिए दवा ली और घर की ओर वापस चल पड़ी।

अंधेरा होने लगा था। छवि जल्दी-जल्दी घर की ओर आ रही थी। अभी वह घर के पास पहुंची ही थी कि उसे चिड़ियों की आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ नीम के पेड़ से आ रही थी। उसे देखते ही चिड़ियों ने और तेज चिल्लाना शुरू कर दिया।

''क्या बात है? ये इतनी जोर से क्यों चिल्ला रही हैं? मैंने दिन

में इन्हें चावल के दाने दिए तो थे।'' उनकी आवाज सुनकर छवि चौंक गई।

जैसे-जैसे वह घर के पास आ रही थी, चिड़ियों ने और तेज चिल्लाना शुरू कर दिया।

''ज़रूर कोई बात है। ये चिड़ियां इतनी ज़ोर से कभी नहीं चिल्लाती हैं।'' छवि डरने लगीं। वह धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ने लगीं।

अचानक वह ज़ोर से चीख पड़ी। उसके घर के बाहर ही बहुत बड़ा-सा सांप कुंडली मारे बैठा था। वह एक दम से घबरा गई। अब उसकी समझ में आया कि क्यों चिड़ियां इतनी ज़ोर से चीख रही हैं?

उसके चीखने की आवाज़ सुनकर हमेशा की तरह आस-पास के सारे कुत्ते छवि के पास जमा हो गए। उन्हें भी सारा माजरा समझ में आ गया। सांप को वहां से भगाना ज़रूरी था, तभी छवि अंदर आ सकती थी।

वे सब उस सांप पर झपट पड़े। एक साथ इतने कुत्तों को देखकर सांप भी घबरा गया। फिर तो ज़ोरदार लड़ाई शुरू हो गई। छवि एक ओर खड़ी यह सब देख रही थी। डर के मारे उसका बुरा हाल था।

सांप के सामने वहां से भागने के अलावा अब कोई चारा नहीं था। उन कुत्तों से बचकर वह खेतों की ओर भाग गया। उसके जाते ही कुत्ते भी धीरे-धीरे वहां से चले गए। छवि घर के अंदर आ गई।

''इतनी देर कहां लगा दी?'' मम्मी ने पूछा।

''सब बताती हूं। पहले तुम दवा खा लो।'' छवि ने मम्मी को दवा दे दी।

दवा खाकर मम्मी फिर से लेट गईं। फिर छवि ने मम्मी को सारी बात बताई। उसकी बात सुनकर मम्मी भी घबरा गईं। उन्होंने छवि को सीने से लगा लिया।

अगले दिन फिर से चिड़ियों ने छवि को आवाज़ दी। दरवाज़े पर कुत्ते भी गुर्राने लगे। उनकी आवाज़ सुनकर छवि बाहर आ गई। लेकिन आज उसके साथ मम्मी भी थीं, उनके हाथ में एक प्लेट थी। जिसमें रोटी के टुकड़े और साथ में चावल के दाने भी थे।

दोनों ने मिलकर उन सबको रोटी और चावल के दाने खिलाए। आखिर उसके इन्हीं दोस्तों ने उसकी जान बचाई थी। अब मम्मी छवि को ऐसा करने से कभी नहीं रोकतीं थीं। ❑

पवन कुमार वर्मा, आमघाट कॉलोनी (पानी टंकी के पूर्व) आमघाट, सुभाष नगर जिला-गाजीपुर (उ. प्र.) 233001

होली आएगी

–तारा निगम

सब चेहरों पर रंग लगाने
मुस्कानों को पता बताने।
होली आएगी।
ढम ढम ढम ढम ढ़ोल बजाने
छम छम छम छम नाच दिखाने।
होली आएगी।

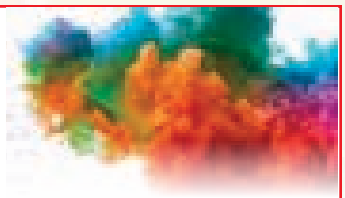

हंस के सबको गले लगाने,
जो रूठे हों उन्हें मनाने।
होली आएगी।
बुराई को मार भगाने,
और नेकी को अपनाने।
होली आएगी।

–बसेरा, प्रेम नगर सतना-485001

फॉर्म-IV

बाल भारती (हिंदी) के अधिपत्य एवं भागीदारी का मसौदा जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन तक प्रकाशित।

(1) प्रकाशन का स्थान	नई दिल्ली
(2) प्रकाशन की अवधि	मासिक
(3) मुद्रक का नाम राष्ट्रीयता पता	डॉ. साधना राउत भारतीय प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
(4) प्रकाशक का नाम राष्ट्रीयता पता	डॉ. साधना राउत भारतीय प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
(5) संपादक का नाम राष्ट्रीयता पता	आभा गौड़ भारतीय प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
(6) उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पूर्ण साझेदार है।

मैं डॉ. साधना राउत एतद् द्वारा घोषणा करती हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

दिनांक : 05.02.2019

(डॉ. साधना राउत)
प्रकाशक